

अनुभूत चिकित्सा संग्रह

: लेखक :

वैद्यराज दादासाहेब भोगे



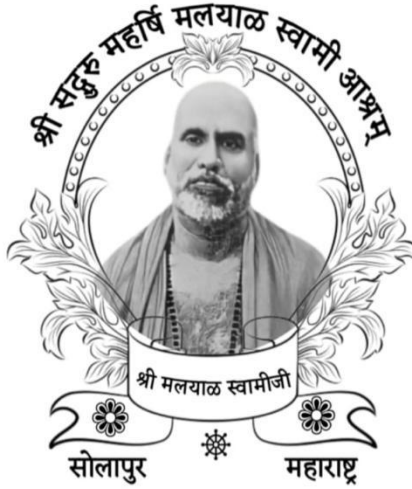
संकलन:- ब्रह्मचारी अजय चैतन्य

ॐ

आरोग्य मित्र प्रकाशन पुष्प चौथे
भाग पहिला

अनुभूत चिकित्सा संग्रह

लेखक:- वैद्यराज दादासाहेब भोगे



व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं ,
वामे जानुतले दधानमपरं हस्तं सुविद्यानिधिम् ।
विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहाङ्गद्युतिं ,
पाराशर्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत्सिद्धये ॥
शुष्कवेदान्त दन्तीश बृन्दसन्तापहारिणे ।
असङ्गानन्दयोगीन्द्रो गुरुर्विजयते तराम् ॥

परम पूज्य श्री श्री श्री गुरुवर्य स्वामी ब्रह्मविद्यानन्दगिरी
परम पूज्य श्री श्री श्री गुरुवर्य स्वामी प्रभुचित्त (शंकर)

Computerized by :-

Vaidya Brahmachari Ajay Chaitanya

पंजीकरण नं,

महा 3860/93 सोलापूर एफ 3731 सोलापूर

संजीवनी धन्वंतरि सेवा मंडळ सोलापूर

अध्यक्ष वैद्य सायण्णा अंबाजी देवरकोंडा

हकीम (वैद्य) ब्रह्मचारी अजय चैतन्य

लेखकाचे मनोगत

आरोग्य मित्र मासिक बंद झाले असले तरी मासिकाचे वर्गणीदार होण्याबद्दलची पत्रे रोज येत असतात. वाचकांची ही जिज्ञासा विचारात घेऊन आरोग्य मित्र मासिकात पूर्वी प्रसिद्ध झालेल्या अनुभूत यशस्वी औषधी प्रयोगांची सविस्तर माहिती. त्यातील घटक द्रव्ये, कृती, प्रमाण अनुपान व गुणधर्मासह या पुस्तकात दिली आहे. हे सर्व सुलभ औषधी प्रयोग असल्याने कुणालाही घरी करता येण्यासारखे आहेत. अनुभूत चिकित्सा संग्रहाचे एकूण दहा भाग प्रसिद्ध करणार आहोत. त्यापैकी पहिला भाग आता प्रसिद्ध होत आहे. अकोला जिल्ह्यातील मंगरुळ नाथ येथे २५ फेब्रुवारी १९६५ रोजी वैद्यराज दादासाहेब भोगे यांच्या अध्यक्षतेखाली अकोला जिल्हा वैद्य संमेलन भरले होते तेव्हा अनेक वैद्यांनी आपले अनुभूत योग दादा साहेबांना लिहून सादर केले होते ते योग या पुस्तकात प्रसिद्ध केले आहेत.

अनुभूत प्रयोग वाचण्यापूर्वी

(चाल : अभंग)

रोग पूर्वीचेच । उपाय जुनेच
नाविन्य भाषेत । फक्त आहे ॥ १ ॥
शास्त्रीय भाषेला । दिला सोपा साज ।
लोक हित काज । साधावया ॥ २ ॥
आरोग्याचे प्रश्न । सदा सारखेच ॥
'उत्तरे पुन्हां तीच । देणे लागे ॥ ३ ॥
वृद्धवैद्य, शास्त्र । ज्ञानाचे सागर ॥
अनुभवांचे आगर । निश्चयेसी ॥ ४ ॥
ग्रंथ, पूर्वाचार्य कामधेनू माझी ॥
ज्ञान दुग्धदेई । नित्यनेमे ॥ ५ ॥
नाम निर्देशाची । नामावली मोठी ॥
उगाच कां ही दाटी । करूं सांगा ॥ ६ ॥
उल्लेखाची हांव । नसे विद्वज्जना ॥
गौरव तयांना । गैर वाटे ॥ ९ ॥

विश्वानंद म्हणे । माझे कांही नोहे ॥

हमाल मी आहे । आचार्यांचा ॥ १० ॥

स्वार्थ आणि परमार्थ समाधानाचा सोपा मार्ग !

कुष्ठ - महारोग - चिकित्सा

जगांत सर्वत्र महारोग दिवसेंदिवस वाढू लागला आहे. त्यावर पाश्चात्य वैद्यक शास्त्रज्ञांनी व आयुर्वेदीय अनुभविक तज्ञ वैद्यांनी उपयुक्त औषधे शोधून काढल्याचे ऐकण्यांत येते. परंतु ती इतकी महाग आहेत की, ती श्रीमंतांनाही परवडणारी नाहीत असे म्हणतात.

अशा स्थितीत डी. डी. एस. प्रमाणे स्वस्त किंमतीत उपलब्ध होणारी डी. डी. एस पेक्षा अधिक गुणकारी अशी उत्तम स्वस्त व सर्वत्र उपलब्ध होणारी " स्वर्णक्षीरी - सत्यानाशी " ही एकमेव वनस्पती आहे. हिचे औषधी गुणधर्म व रोग्यावरील यशस्वी चिकित्सेची माहिती 'कुष्ठ- महारोग चिकित्सा' या पुस्तकात दिली आहे.

| प्रयोग अंक | विषयानुक्रमाणिका | पृष्ठ |
|------------|-------------------------------|-------|
| | रोग अनेकअसले तरी औषधमात्र एकच | |
| | नारसिंहावलेह | 1 |
| १ ला | थंडीताप- मलेरिया | 8 |
| २ रा | शीतज्वर, इन्फ्लूएंझा | 10 |
| | इन्फ्लूएंझा वटी | 10 |
| ३ रा | इन्फ्लूएंझावर अनुभविक काढा | 11 |
| ४ था | विषमज्वर - टायफॉईड | 11 |
| ५ वा | देवी-स्मॉल पॉक्स | 12 |
| | देवी प्रतिबंधक प्रयोग | 12 |
| ६,७वा | देवी येऊ नयेत म्हणून उपाय | 13 |
| ८ वा | खोकला : कफ : | 13 |
| ९ वा | गोवर, मीझल्स | 13 |
| १० वा | कांजिन्या-चिकन पॉक्स | 14 |
| | परिपाठादि काढा | 14 |
| ११ वा | डांग्या खोकला : हूपिंग कॉफ | 15 |

| | | |
|-------|------------------------------|----|
| १२ वा | गिलायु, टॉन्सिल्लस वाढल्यावर | 15 |
| १३ वा | गर्भ संस्थापक योग | 16 |
| १४ वा | अर्धशिशू, हेडएक, | 16 |
| १५ वा | अर्धशिशू, हेडएक, | 17 |
| १६ वा | पांढरे कोड | 17 |
| १७ वा | इसब | 17 |
| १८ वा | पोटांतून | 17 |
| १९ वा | अजीर्ण, अग्निमांद्य | 18 |
| २० वा | क्षुधावर्धक चूर्ण | 18 |
| २१ वा | अपचन-इंडायजेशन पाचक अवलेह | 18 |
| २२ वा | पाचक मिश्रण | 18 |
| २३ वा | धातू पडणे | 19 |
| | धातुस्तंभक प्रयोग | 19 |
| २४ वा | महारोग-लेमसी | 19 |
| २५ वा | कृमि-वर्म्स | 20 |
| २६ वा | कृमि-वर्म्स | 20 |

| | | |
|-------|--------------------------------------|----|
| २७ वा | अतिसार, डायरिया | 20 |
| २८ वा | गजकर्ण रिंगवर्म | 20 |
| २९ वा | मूळव्याध, पाईल्स | 21 |
| ३० वा | दमा-अस्थमा | 21 |
| ३१ वा | सुलभ नेत्रामृत | 22 |
| ३२ वा | न्युमोनिया | 23 |
| ३३ वा | मलावरोध, बद्धकोष्ठ, कॉन्स्टिपेशन | 23 |
| ३४ वा | मलावरोध, बद्धकोष्ठ, कॉन्स्टिपेशन | 23 |
| ३५ वा | इंद्रिय शैथिल्य, सेक्स्युअल डेबिलिटी | 24 |
| ३६ वा | सर्पदंश - स्नेकचाईट | 24 |
| ३७ वा | उपदंश-गर्मी-सिफिलिस | 25 |
| ३८ वा | बदावर मलम :- | 25 |
| ३९ वा | कर्ण बाधिर्य डेफनेस | 26 |
| ४० वा | कर्ण शूल | 26 |
| ४१ वा | कर्णस्त्राव | 26 |
| ४२ वा | कायाकल्प करणारे श्रीसिद्धि मोदक | 27 |

| | | |
|-------|-----------------------------|----|
| ४३ वा | नारू-गिनी वर्म | 27 |
| ४४ वा | गण्डमाला नाशक लेप | 28 |
| ४५ वा | गंडमाळा | 28 |
| ४६ वा | बाह्योपचार | 29 |
| ४७ वा | आंत्रपुच्छ दाह, अपेडिसायटिस | 29 |
| ४८ वा | लठ्ठपणा : ओबेसिटी | 29 |
| ४९ वा | क्षय ट्यूबरक्युलोसिस | 30 |
| ५० वा | क्षय ट्यूबरक्युलोसिस | 30 |
| ५१ वा | दंत शूल , पायोरिया , | 31 |
| | रक्तस्राव हेमरेज | 32 |
| ५२ वा | वेदना आणि शोथहारी गुटिका | 32 |
| ५३ वा | एक प्रभावी दंतमंजन | 32 |
| ५४ वा | आकडी, कनव्हल्शन्स | 33 |
| ५५ वा | माक्याचे केशरंजन तेल | 34 |
| ५६ वा | श्वास - डिस्त्रिया | 35 |
| ५७ वा | आम्ल पित्त-ऑसिडिटी | 35 |

| | | |
|-------|-------------------------------|----|
| ५८ वा | आम्ल पित्त-ऑसिडिटी | 35 |
| ५९ वा | स्वप्नावस्था-नाइट डिस्चार्जेस | 36 |
| ६० वा | निद्रानाश-इन्सॉम्निया | 36 |
| ६१ वा | रक्तदाब-ब्लड प्रेशर | 36 |
| ६२ वा | वातघ्न वटी स्पप्रदीपा | 37 |
| ६३ वा | मधुमेह डायबेटिस | 37 |
| ६४ वा | कावीळ-जाँडिस | 37 |
| ६५ वा | आंव - डिसेंट्री | 38 |
| ६६ वा | आंव - डिसेंट्री | 38 |
| ६७ वा | बुद्धिवर्धक-ब्रेनटॉनिक | 38 |
| ६८ वा | मालीशसाठीं अनुभूत तेल | 39 |
| ६९ वा | आस्थिभंग फॅक्चर | 40 |
| ७० वा | अंडवृद्धी हैट्रोसील | 40 |
| ७१ वा | आग्निदीपक वटी | 41 |
| ७२ वा | आग्निदीपक वटी | 41 |
| ७३ वा | स्तन दृढीकरण तेल | 42 |

| | | |
|-------|------------------------------|----|
| ७४ वा | अंग बाहेर येते | 43 |
| ७५ वा | सुलभ प्रसूतीसाठी | 43 |
| ७६ वा | आर्तव शुद्धीकर योग | 44 |
| ७७ वा | सुलभ प्रसूतीसाठी वात | 44 |
| ७८ वा | जखमेवर मलम | 44 |
| ७९ वा | कुष्ठ नवनीत | 45 |
| ८० वा | डांग्या खोकल्यावर गोळ्या | 46 |
| ८१ वा | खरजेवर अनुभाविक मलम | 46 |
| ८२ वा | दम्यावर अद्भुत प्रयोग | 47 |
| ८३ वा | केसांच्या वाढीसाठी | 47 |
| ८४ वा | लहान मुलांचा कोलू | 47 |
| ८५ वा | महारोग गलत्कुष्टावर सुलभ योग | 48 |
| ८६ वा | शतावर्यादि चूर्ण | 48 |
| ८७ वा | रतिवर्धन योग | 49 |
| ८८ वा | वीर्यशोधक वटी | 50 |
| ८९ वा | रक्तदाब हायब्लड प्रेशर | 51 |

| | | |
|-------|---|----|
| ९० वा | केशवधर्क तेल | 51 |
| ९१ वा | पोटदुखीवर गोळ्या | 52 |
| ९२ वा | धनुर्वात | 52 |
| ९३ वा | प्रदर ल्यूकोरिया | 52 |
| ९४ वा | विषूचिका-कॉलरा | 53 |
| ९५ वा | आग्निदग्धव्रण-बर्न्स | 53 |
| ९६ वा | चंदनी सरबत | 54 |
| ९७ वा | मुखपाक तोंड येणे | 54 |
| ९८ वा | शरीरावरचे काळे डाग | 54 |
| ९९ वा | कडकी व रक्तशुद्धीवर ज्येष्ठमधादि चूर्ण | 55 |
| १००वा | पीनसावर सुलभ योग | 55 |
| | आयुर्वेद बृहस्पती गोपाळशास्त्री गोडबोले यांचे | |
| | कॅन्सरवरील चिकित्सा प्रयोग | 56 |
| | कुच कठोर तेल | 57 |
| | दमेकन्यासाठी औषधी विड्या | 58 |
| | दमा विडी कशी करावी ? | 58 |

| | |
|---|----|
| महत्वाची सूचना | 58 |
| टकलावर शास्त्रोक्त योग | 59 |
| डोळ्यांच्या साथीवर ! रामबाण सुलभ योग !! | 59 |
| चार दिवसात डोळे बरे झाले | 61 |
| पाचशे रोग्यावरील यशस्वी योग | 61 |
| निपुत्रिकांना पुत्रप्राप्तीसाठी, गर्भसंस्थापक | 62 |
| शास्त्रोक्त प्रयोग ,वंध्यत्व नाशक अनुभूत योग | |
| निपुत्रिकांना गर्भ संस्थापक योग | 63 |
| सोळा संस्कारांची उपयुक्तता | 63 |
| ओटी भरण्यास संस्कार व विधी | 63 |
| बाल विवाहातील शास्त्रीय दृष्टी | 64 |
| ओटीत नारळाच का घालतात | 64 |
| शास्त्रात् रुढीर्बलीयसी | 65 |
| वृद्धिः समानैः सर्वेषाम् | 65 |
| आकारातील समानता | 66 |
| गर्भधारणा कशी होते ? | 66 |

| | |
|-----------------------------|----|
| कोकणस्थांना अधिक संतति का ? | 67 |
| पळसाचा गोंद म्हणजे वीर्य | 67 |
| मथुनै सदृश औषधीकरण | 68 |
| नारळाचे औषधी गुणधर्म | 68 |
| धन्वन्तरिवन्दना | 71 |

रोग अनेक असले तरी औषधं मात्र एकच

नारसिंहावलेह(नरसिंह चूर्ण)

(रसरत्नाकर भाग २ पृष्ठ १०२५)

शतावर्या रज प्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च ।
वाराह्या विंशतिपलं मडूच्याः पंचविंशतिम् ॥११॥
भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकस्य दशैव तु ।
तिलानांशोधित नां च प्रस्थं दद्यात्सुन्वूर्णि तम् ॥१२॥
त्र्यूषणस्य पलान्यष्टौ शर्करायास्तु सप्तभिः ।
माक्षिकं शर्करार्धेन माक्षिकार्धेन वै घृतम् ॥१३॥
शतावरीसमं देयं विदारीकन्दजं रजः ।
एतदेकीकृतं चूर्णं स्निग्धे भाण्डे निधापयेत् ॥१४॥
पलार्धमुपयुञ्जीत यथेष्टं चास्य भोजनम् ।
मासैकमुपयोगेन जरां हन्ति रुजामपि ॥१५॥
वलीपलित खालित्य मेह पाण्ड्वादि पीनसान् ।
हन्त्यष्टादशकुष्ठानि तथाष्टावुदराणि च ॥१६॥
भगन्दरं मूत्रकृच्छ्रं गृध्रसी सहलीमकम् ।
चयञ्चैव महाव्याधिं पञ्चकासान् सुदारुणान् ॥१७॥

अशीति वातजान् रोगान् चत्वारिंशश्च पैत्तिकान् ।

विंशति श्लेष्मिकांश्चापि संसृष्टान् सन्निपातिकान् ॥

सर्व्वीनश मदान् हन्ति वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ।

सकांचनाभो मृग' राजविक्रमस्तुरङ्गमञ्चाप्यनुयाति
वेगतः स्त्रीणां शतं गच्छति सातिरेकं प्रकृष्टदृष्टिर्यथा
विहंगः पुत्रान्संजनयेद्धीमान्नरसिंहनिभांस्तथा ।

रसिंहमिदं चूर्णं सर्वरोगहरं नृणाम् ।

वार हीकन्द संज्ञस्तु चर्मकारापको मतः ॥२१॥

पश्चिमे गृष्टिशब्दाख्यो वराह लोमवानिव ॥२२॥

सध्याच्या धकाधकीच्या व धावपळीच्या जीवनात काढा करून घेणे जमत नाही. आसवारिष्टांच्या बाटल्या ऑफीसमध्ये घेऊन जाणे शक्य नसते. मोठ्या प्रमाणात चूर्णाची फक्की घेणे कंटाळवाणे वाटते. त्यामुळे अशा प्रकारची आयुर्वेदीय चिकित्सा घ्यायला लोक का कू करतात. तसेच त्यांना दिवसातून ठराविक वेळी व तीन चारदा औषध नियमाने घेणेही जमत नाही. आम्हाला काहीही करावे न लागता वैद्य डॉक्टरांनी सुई टोचून आमच्या शरीरात औषध ढकलून द्यावे व आम्हाला रोगमुक्त करावे .अशी आजच्या समाजाची प्रवृत्ती दिससैंदिवस वाढू लागली आहे व त्यामुळेच निरनिराळी इंजेक्शने व त्वरित वेदना नाहीशा करणाऱ्या गोळ्यांचा

सर्वत्र सुकाळ होऊ लागला आहे.

या औषधोपचारांनी रोग बस होऊ शकत नाही हे माहीत असले तरी तात्पुरता आराम मिळतो म्हणून महाग असली तरी ही औषधे घेतली जात असतात. समाजातील या प्रवृत्तीवर आपणाला काही आयुर्वेदीय औषधोपचार सुचविता येईल का ? याचा जेव्हा आम्ही विचार करू लागलो, अनेक प्राचीन ग्रंथांचे परिशीलन करू लागलो, तेव्हा “वृंद माधव” व रसरत्नाकर या ग्रंथात आम्हाला एक अप्रतीम औषधी योग सापडला. हा योग आजच्या समाजाच्या प्रवृत्तीला आणि अपेक्षापूर्तीला प्रतिसाद देणारा असल्यामुळे आम्ही तो मोठ्या प्रमाणात फरून शास्त्रात सांगितलेल्या त्याच्या गुणधर्माची प्रचीती त्या त्या रोगावर व अवस्थेवर घेऊन पाहिली व शास्त्रात सांगितलेले त्या योगाचे गुणधर्म यथार्थ असल्याचे आढळून आले आहे.

या औषधाचे वैशिष्ट्य म्हणजे ते दिवसातून एकदाच घ्यायचे आहे. खर्चाच्या दृष्टीने सर्वांना परवडणारे आहे. घेतांना स्वादिष्ट लागणारे असल्यामुळे आबाल वृद्ध ते आवडीने घेतात, एवंगुण विशिष्ट औषधाची कृती व गुणधर्मा-सह संपूर्ण माहिती “ सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु । सर्वे संतु निरामयः ॥ सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चित् दुःख भाक् भवेत् ” ॥ १ ॥ या सद्भावनेने येथे काहीही आड पडदा न ठेवता, गुप्तता न राखता दिली आहे.

"उन्हाळा जोगी; हिवाळा भोगी आणि पावसाळा रोगी' अशी आपली पूर्वापार चालत आलेली लोकोक्ती. आहे. आता पावसाळ्याचे दिवस आहेत. श्रावण झडीला सुरुवात झाली आहे. अशावेळी रोग होऊ नये म्हणून व झालेल्या रोगांचा परिहार व्हावा म्हणून घरोघरी प्रत्येक कुटुंबात हे औषध संग्रही असणे आवश्यक आहे. कृती सोपी आहे. घटक द्रव्ये सर्वांच्या परिचयाची आहेत तेव्हा हे अप्रतीम गुणकारी औषध घरी सहज करता येण्यासारखे आहे.

घटक द्रव्ये :-

- | | |
|---------------------|------------------------|
| १) शतावरी ६० तोळे. | ८) सुंठ ३२ तोळे |
| २) गोखरू ६४ तोळे | ९) मिरे ३२ तोळे |
| ३) डुकरकुंद ८० तोळे | १०) पिंपळी ३२ तोळे |
| ४) गुळवेल १०० तोळे | ११) साखर २८० तोळे |
| ५) बिब्वे १२८ तोळे | १२) मध १४० तोळे |
| ६) चित्रक ४० तोळे | १३) तूप ७० तोळे |
| ७) तीळ ६४ तोळे | १४) भुई कोहळा ६४ तोळे. |

ही सर्व चौदाही औषधे सर्व साधारणपणे सर्वांच्या परिचयाची व सर्वत्र मिळणारी आहेत या सर्व औषधांचे चूर्ण करून घ्यावे. बिब्वे शुद्ध करून घ्यावे. अशुद्ध

वापरू नयेत. ही सर्व द्रव्ये एकत्र मिसळून एकजीव करावी व स्निग्ध भांड्यात चिनी मातीच्या बरणीत भरून ठेवावी.

याचे गुणधर्म सांगतांना शास्त्र कारांनी म्हटले आहे की,

एक मासोप योगेन ।

जरा हन्ति रुजामपि ॥ १ ॥

याचे एक महिना नियमाने सेवन करणारा मनुष्य चिर यौवन होतो. म्हातारपण त्याला येत नाही. तसेच त्याच्या सर्व वेदनांचा दुःखांचा नाश होतो. शास्त्रात हे औषध दोन तोळे प्रमाणात रोज जेवणापूर्वी घ्यायला सांगितले आहे. हे औषधाचे प्रमाण पूर्वीच्या काळात मानवणारे असले तरी हल्लीच्या काळाचा विचार करून आम्ही हे प्रमाण घ्यायला सांगतो. तसेच एक महिन्या ऐवजी तीन महिने नियमीत सुरू ठेवण्यास सुचवितो. विशेष म्हणजे या औषधाला इतर औषधाप्रमाणे शास्त्रात पथ्यापथ्य सांगितलेले नाही.

(१) प्लीहा वृद्धी (२) पीनस पडसे (३) भगंदर (४) मूत्रकृच्छ्र (५) मूत्राश्मरी (६) अठरा प्रकारचे कुष्ठ रोग (७) प्रमेह (८) आठ प्रकारचे उदर रोग (९) महारोग (१०) पाच प्रकारचे कास (११) पेशी प्रकारचे वात विकार (१२) चाळीस प्रकारचे पित्त बिकार (१३)

वीस प्रकारचे कफ बिकर (१४) द्वि दोषज व (१५) सान्निपातिक सर्व विकार (१६) सर्व प्रकारचे अर्श म्हणजे मूळ व्याध (१७) म्हातारपणातील प्रकृतीच्या सर्व तक्रारी दूर होतात. वेदनांचा नाश होतो. अंगावरील सुरकुत्या जाताता केस पिकत नाहीत. टक्कल पडत नाही. असे याचे गुणधर्म पुढील श्लोकातून वर्णन केले आहेत

एष मासोपयोगेन जरांहन्ति रुजामपि ।

बली पलित खालित्य प्लीह व्याधींश्च पीनसन् ॥ १ ॥

भगंदरं मूत्र कृच्छ्र अश्मरींश्च भिनत्यपि ॥

अष्टा दशैव कुष्ठानि तथाष्टाबुदराणिच ॥ २ ॥

प्रमेहंच महा व्याधिं पंच कासान् सुदुस्तरान् ॥

अशीति वातजान् रोगांश्चत्वारिंशश्च पैत्तिकान्

विंशति श्लैष्मिकांश्चैव संसृष्टान् सान्निपातिकान् ॥

सर्वानश गदान् हन्ति वृक्ष मिंद्रो शनिर्यथा ॥

अशा तऱ्हेने या नारसिंह अवलेहाचे अनेक प्रकारच्या रोगावर उपयुक्त कार्य होते.

हे सर्व शरीरस्थ रोग नाश पावून शरीर निरोगी होते इतकेच नव्हे तर ते दैदीप्यमान शक्तिशाली होते. त्याचे वर्णन करतांना शास्त्रकारांनी म्हटले. आहे की,

स कांचनामो मृगराज विक्रमः ॥

तुरंग वेगो जलदौघं निःस्वनः ॥ १ ॥

स्त्रीणां शतं गच्छति सोति रम्यः ॥

सुरूपवान् स्वत्व वतान वरिष्ठः ॥ २ ॥

❀ हा नारसिंहावलेह सेवन करणाराची अंगकांती सुवर्णाप्रमाणे दैदीप्यमान होते.

❀ सिंहाप्रमाणे शक्तिमान व पराक्रमी होतो.

❀ अश्वाप्रमाणे संभोगशक्ति त्याला प्राप्त होते.

❀ जलोघाप्रमाणे त्याची वाणी धीर गंभीर होते.

❀ सुंदर रूपवान सत्त्वशील अशा शंभर स्त्रियांचा उपभोग घेण्याची शक्ति त्याच्या अंगात निर्माण होते.

अशातऱ्हेने हा सुलभ कायाकल्प प्रयोग आहे. सामान्य माणसाला सहज करता येण्यासारखा आहे. पूर्वीचे साधुसंत म्हणत असत की, 'लटिके न बोलू आम्ही ' अनुभवाशिवाय आम्ही काहीही बोलत नसतो, सांगत नसतो. तसेच शास्त्रकारही आपल्या लिखाणाबाबत असे स्पष्टपणे सांगत असत की,

'नामूलं लिख्यते किंचित्' आधार अनुभव प्रमाण असल्याशिवाय आम्ही काहीही लिहीत नसतो.

तरी वाचकांनो या प्रयोगाचे सेवन करून आपले अनुभव जरूर कळवावे. तसेच काही अधिक माहिती हवी असल्यास उत्तराकरिता स्वतःचा पत्ता लिहिलेले पाकीट पाठवावे म्हणजे योग्यते सहकार्य व मार्गदर्शन अवश्य करू. इत्यलम्.

शंभर रोगांवरील अनुभूत प्रयोग

वाचकांनी या अनुभूत प्रयोगांचा उपयोग करावा. आवश्यक ती अधिक माहिती त्यांना दिली जाईल. तसेच आपणांस आलेले अनुभव प्रसिद्धीसाठी पाठवावे.

प्रयोग १ ला.

थंडीताप - मलेरिया

पाळीने येणाऱ्या तापाला मलेरियाला उत्तम सोपे सर्वत्र मिळणारे असे औषध म्हणजे 'पारिजातक' हे होय. याची झाडे सर्वांना सुपरिचित अशी आहेत याची फुले. देवाला वाहातात. तसेच समुद्र मंथनातून जी चौदा रत्ने निघाली त्या चौदा रत्नांपैकी 'पारिजातक' हे एक रत्न आहे असा उल्लेख पुराणांत आपण श्रद्धेने वाचतो. परंतु प्रत्यक्ष व्यवहारांत मात्र हे रत्न आपल्या संग्रही असून देखील 'फ्लाइमोक्विनीन-ॲंटेब्रिन-मॅपक्वीन - इत्यादि परदेशी औषधांच्या गोळ्यासाठी आपल्या

लक्ष्मीचा ओघ परदेशांत पाठवित असतो. समर्थानी म्हटल्याप्रमाणे 'घरी कामधेनू पुढे ताक मागे' अशा-तलाच हा आपला प्रकार म्हणावा लागेल. निसर्गाने निर्माण केलेले हे 'पारिजातकाचे रत्न आपण आरोग्य रक्षणासाठी उपयोगात आणल्यास थंडी-तापाच्या गोळ्यासाठी खेड्यांतून जाणारे कोट्यावधी रुपये सहज वाचू शकतील. सुमारे दहा कोटी लोक दरसाल थंडीतापाने आजारी पडतात असे आकडे शास्त्रज्ञांचे म्हणणे आहे. १९४२ च्या 'क्विट इंडिया'च्या चळवळीत आम्ही अज्ञात वासात असतांना 'क्लीट्लेरिया' टॅब्लेट्स काढल्या होत्या व त्यासाठी उत्तर हिंदुस्तानांत ग्वाल्हेरला असतांना यावर एक हिंदी शेर लिहिला होता तो असा -

दस करोडकी यही पुकार ।

क्विट् मलेरिया और बुखार ।

टिकिया खावे एक बार ।

मलेरियाका बेडा पार ।

मलेरियाच्या तापांत देण्यासाठी करावयाच्या गोळ्यांची कृती पारिजातकाची ओली पाने चटणीप्रमाणे वाटावी व गुळांत सुपारी एवढ्या त्याच्या गोळ्या करून ठेवाव्या.

घेण्याची रीत : पाळी येण्यापूर्वी तीन तास अगोदर १ गोळी खाल्यास त्या दिवशी

तापाची पाळी येत नाही. रोज सकाळ सायंकाळ २ वेळ एकेकगोळी घ्यावी. असे सात अगर चौदा दिवस आवश्यकतेनुसार औषध घ्यावे. खेडोपाडी शिक्षकांती समाज सेवकांनी, ग्रामपंचायतींनी याचा मोठ्या प्रमाणांत उपयोग करून आपले अनुभव प्रसिद्धीसाठी पाठवावे.

प्रयोग २ रा

शीतज्वर, इन्फ्लूएंझा

इन्फ्लूएंझाची साथ ही आता सर्वत्र उद्भवू लागली आहे व त्यावर 'त्रिभुवन कीर्ती' हे तयार औषधहि सर्वाना सुपरिचीत झाले आहे. आरोग्य- मित्राने जुलै १९५७ चा खास अंक प्रसिद्ध करून या रोगावर सविस्तर व सुलभ चिकित्सेसह माहिती दिली होती आम्ही हजारो रोग्यांना देऊन ज्या औषधाचा अनुभव घेतला आहे. त्याचा पाठ येणे प्रमाणे.

इन्फ्लूएंझा वटी

१) शुद्ध बचनाग १ भाग ३) काळी मिरे
५ भाग

२) कपर्दिक भस्म २ ॥ भाग

आल्याच्या रसात व तुळशीच्या रसात एकेक दिवस खल करून मुगा एवढ्या गोळ्या कराव्या.

प्रमाण : १ ते तीन गोळ्या दिवसातून ३ वेळा पाण्याबरोबर घ्याव्या.

प्रयोग ३ रा

इन्फ्लूएंझावर अनुभविक काढा

- | | |
|---------------|--------------|
| १. कचोरा | ६. नागरमोथे, |
| २. पित्तपापडा | ७. कुटकी, |
| ३. सुंठ | ८. रिंगणी |
| ४. देवदार | ९. किरायता |
| ५. रास्त्रा | |

यांचा काढा करून त्यात पिंगळीचूर्ण व मध घालून सकाळ सायंकाळ २ वेळ द्यावा.

प्रयोग ४ था

विषमज्वर - टायफॉईड

- १) दूर्वाचा रस ३ चमचे २) खडीसाखर

दिवसातून ३ वेळ दिल्याने विषम ज्वरांतील दाह-कमी होतो. लघवी साफ होते. पचनेंद्रिये-मूत्राशय मूत्रमार्ग यांतील ऊष्णता नाहीशी होते. ज्वरांत ज्वरोष्मा आणि त्यामुळे होणारे इतर उपद्रव या साध्या सर्वत्र

उपलब्ध असलेल्या व सर्वाना सहज ओळखता येणाऱ्या वनस्पतीने बरे होतात. म्हणून त्याचा मोठ्या प्रमाणावर उपयोग करून आपले अनुभव वैद्यांनी व वाचकांनी जरूर नमूद करून ठेवावे. विशेषेण गोष्ट म्हणजे सध्या टायफॉईडवर सर्सास प्रचारांत असलेल्या स्ट्रेप्टोमायसीनआरोमायसिन इत्यादि औषधाप्रमाणे याचे दुष्परिणाम कधीहि होत नाहीत अगदी अनपायी व सर्वाना वापरता येण्यासारखे हे सोपे औषध आहे.

प्रयोग ५ वा

देवी-स्मॉल पॉक्स

देवी येऊ नयेत म्हणून लस टोचून घेतलीच पाहिजे असा कायदा सरकारने केलेला आहे व देवी टोचून न घेणाराला शिक्षा ठेवली आहे. तथापि देवीची साथ ही सर्वत्र येतच असते अशावेळी देवीच्या साथीला आळा घालण्यासाठी प्रतिबंधक उपाय काय आहे? असा प्रश्न साहजीकच निर्माण होतो. सर्वात सोपा प्रतिबंधक उपाय पुढे दिला आहे.

देवी प्रतिबंधक प्रयोग

१)चिंचोक्याचे चूर्ण २)हळद

हे मिश्रण ४ गुंज प्रमाणांत दिवसांतून २ वेळ असे १४ दिवस द्यावे म्हणजे देवी येणार नाहीत.गावात साथ

आली असेल तेव्हां ग्राम पंचायतीने हे औषध मोफत घरोघर बाटावे. सोपे आहे व उपयुक्तहि आहे.

प्रयोग ६ वा

देवी येऊ नयेत म्हणून उपाय

१)कडू निंबाची पाने ६ २)काळी मिरे ५ नग

बारीक वाटून त्याचे सरबत एक आठवडा प्याल्याने देवी निघायचे भय रहात नाही.

प्रयोग ७ वा

रान केळ्याचे बी ८ ते ९ नग पाण्यात बारीक वाटून दोन आठवडे सरबताप्रमाणे प्याल्याने एक वर्ष देवी निघायचे भय रहात नाही.

प्रयोग ८ वा

खोकला : कॉफ :

मक्याची कणसे १ भाग आंबी हळद १ भाग सैंधव १ भाग हे सर्व चुन्याच्या निवळींत भिजवून वाळवावे. वाळल्यावर जाळून काळा कोळसा करावा. व बारीक पूड करून बाटलीत भरून ठेवावे.

ही काळी मात्रा सर्व तऱ्हेच्या खोकल्यावर उत्तम औषध आहे.

प्रमाण मोठ्या माणसाला ४ गुंजा चूर्ण लहान मुलांना २ गुंजा चूर्ण दिवसांतून ३ वेळ मधांतून चाटवावे. सोपे सुलभ अनपायी पण अनुभूत असा हा योग आहे.

प्रयोग ९ वा

गोवर, मीझल्स

कडु निम्बाच्या सालीचा आतील गाभा-खोड घेऊन ते चंदनाच्या खोडाप्रमाणे सहाणीवर उगाळावे व ते 'गंध' अर्धा तोळा + खडीसाखर असे मिश्रण रोज दोन वेळ चाटवावे. याने गोवराची उष्णता नाहीशी होते.

प्रयोग १० वा

कांजिण्या-चिकन पॉक्स

'परिपाठ' ही बारीक बारीक फोड असलेली कोथिंबिरीसारखी वनस्पती आहे. ही देवी, गोवर, कांजिण्या यासारख्या अंगावर फोड उठणाऱ्या तापावर उत्तम गुणकारी आहे.

परिपाठादि काढा

कृति :-

परिपाठ

ज्येष्ठमध

गुलाबकळी

हिरडेदळ

बहाव्याचा मगज काळी द्राक्षे.

प्रत्येकी पावतोळा. +४० तोळे पाणी टाकून १/४काढा करावा व द्यावा. रोज दोन वेळ.

प्रयोग ११ वा

डांग्या खोकला : हूपिंग कॉफ

कृति :- सोनचाफ्याचे फूल १ नग + २० तोळे पाणी यांचा काढा करावा. पाच तोळे काढा उरल्यावर त्यांत गोडीपुरती खडीसाखर टाकावी.

प्रमाण :- १ चमचा अर्ध्या अर्ध्या तासाने देणे.

प्रयोग १२ वा

गिलायु, टॉन्सिल्ल्स वाढल्यावर

कृति :- बाळहिरडे गोमूत्रांत बुडवावे व रोज नवे गोमूत्र घालावे. अशा रितीने सात दिवस उन्हात पडू द्यावे. नंतर काढून चांगले वाळवावे. व त्यांत वाळा + बडिशेप + कोष्ठ यांच्या काढ्याच्या सात सात भावना देऊन नंतर त्याचे चूर्ण बारीक करून वाळवावे व बाटलींत भरून ठेवावे.

प्रमाण :- वयोमानाप्रमाणे २ ते ८ गुंजा दिवसांतून ३ वेळ मधातून चाटवावे. म्हणजे डांग्या खोकला बरा होतो.

प्रयोग १३ वा

गर्भ संस्थापक योग

वडाची, नवीन पाने फुटतांना बारीक अंकुर येतात. ते बारीक वाटून त्याच्या बोरा एवढ्या गोळ्या कराव्या. एकेक गोळी रोज तीन वेळा तुपांतून सात दिवस घ्यावी. वटसावित्री आख्यानांत जेव्हां सावित्री यमाला म्हणते की, 'ममानपत्यः पृथिवि पतिः पिता । भवेत् पितुः पुत्र शतं तयौरसम् ॥ असा वर.द्या. तेव्हा यमधर्म तिला म्हणतात की, (आर्या)

बहूशाखा विस्तारी प्रबल असे दीर्घजीवि ॥ बटबीज

वांझेस पुत्र होई, वटदुग्धे ये नपुंसका तेज ॥

दीर्घायुष्य मिळावे, धन, यौवन, सुत असे जया वाटे

त्याने वट महिमा हा जाणुनि घेतां मिळेल सुख मोठे

(पंडित विश्वानंद विरचित सावित्री आख्यान)

प्रयोग १४ वा

अर्धशिशी, हेडएक,

(१) सामान्य डोकेदुखीवर- २१ वेलदोड्यांचे वस्त्रगाळ चूर्ण + ४ गुजा पिंपळीचे चूर्ण एकत्र करून मधांतून चाटवावे. ताबडतोच डोकेदुखी थांबते.

प्रयोग १५ वा

(२) अर्धशिशि - चमेलीच्या पाल्याच्या रसांत अर्धा गुंज स्वच्छ मीठ घालून न्याचे थेंच सूर्योदयापूर्वी नाकांत टाकावे ३ दिवसांत गूण येतो.

प्रयोग १६ वा

पांढरे कोड

बावची चूर्ण ४ भाग शुद्ध हरताळ १ भाग यांचा गोमूत्रांत सात देवस खल करून गोळ्या तयार कराव्या व गोमूत्रांत उगाळून त्याचा जाडसर लेप पांढरे कोड जेथे असेल त्या जागेवर लावावा.

प्रयोग १७ वा

इसब

इसबावर-कासविंदा - (चक्रमर्द) या वनस्पतीचे पंचांग म्हणजे-मूळ कांडा-पाने फुले-शेंगा जाळून त्याची राख करावी. तसेच तीळ-तुरीची डाळ-निम्बाची पाने यांचीहि समभाग राख मिश्र करून ती शतधौत घृतात कापूर टाकून मलम तयार करावे व लावावे.

प्रयोग १८ वा

पोटांतून- गंधकरसायन व मंजिष्ठादि काढा द्यावा.

प्रयोग १९ वा

अजीर्ण, अग्निमांद्य

क्षुधावर्धक चूर्ण नं. १ : रुईची फुले वाळवून त्याचे चूर्णात समभाग साखर टाकावी व ते चूर्ण ४ ते ८ गुंज प्रमाणांत द्यावे म्हणजे अग्निमांद्य दूरहोऊन उत्तम भूक लागते.

प्रयोग २० वा

क्षुधावर्धक चूर्ण नं. २ :- सुंठ + मिरे + पिंपळी. समभाग चूर्ण करून ४ ते ८ गुंज प्रमाणांत मधांतून किंवा आले गुळांतून रोज २ वेळ सकाळ सायंकाळ चाटून खावे.

प्रयोग २१ वा

अपचन-इंडायजेशन पाचक अवलेह

४ गुंजा वेलदोड्याची वस्त्रगाळ पूड + २ गुंजा भाजलेला हिंग हे मिश्रण लिंबाच्या रसांतून चाटवावे म्हणजे अपचनामुळे पोटाला आलेली फुगवटी आफरा ताबडतोब कमीहोतो

प्रयोग २२ वा

पाचक मिश्रण

दहा वेलदोडे + १ रत्तल पाणी यांचा ? काढा करावा व त्यांत साखर टाकून तो घ्यावा. थोड्याच वेळांत अजीर्ण कमी होते.

प्रयोग:२३ वा

धातू पडणे

लघ्वीतून धातू जाण्याची तक्रार हल्ली फार मोठ्या प्रमाणावर दिसून येते. यासाठी ज्यांना नवचैतन्य वटी धातु स्तंभक-शतावर्यादि चूर्ण इत्यादि औषधे घेणे पैशाच्या अभावी शक्य होत नाही, अशांना आम्ही खालील सुलभ प्रयोग सुचवीत असतो. हा प्रयोग सर्वाना सहज करता येण्यासारखा आहे.

धातुस्तंभक प्रयोग

बेलाची पाने अडीच तोळे + जिरे अर्धा तोळा + साखर एक तोळा एकत्र वाटून सरबत करून घ्यावे.

प्रयोग २४ वा

महारोग-लेमसी

[१] अनंतमूळ चूर्ण १ तोळा ४ कप पाण्यांत टाकून काढा करावा व तो दूध साखर टाकून घ्यावा. रोज सकाळी व सायंकाळी २ वेळा.

[२] सत्यानाशीचा रस १ तोळा सकाळ सायंकाळ

गायीच्या दुधांतून घ्यावा व सत्यानाशीचे तेल
अंगाला लावावे.

प्रयोग २५ वा

कृमि-वर्म्स

जंत - खाज कुहिलीच्या बियावर जी लव येते ती
लव-कुसे-हेजंतावर उत्तम औषध आहे. ही कुसे गुळांतून
रात्री झोपण्यापूर्वी द्यावी.

प्रयोग २६ वा

प्रयोग २ रा - कपिला ४ गुंजा ते ३ मासे गुळांत
कालवून रात्री झोपण्यापूर्वी घ्यावी. म्हणजे जंत पडतात.
शौचाला साफ होते व भूक वाढते.

प्रयोग २७ वा

अतिसार, डायरिया

सुंठ + जायफळ + सांबरशिंग प्रत्येकी सहाणेवर
पाण्यात उगाळून १ चमचा+तूप+ एक चमचा साखर
असे मिश्रण करून ते थोडे खदखदून (गरम करून)
दिवसांतून ३ वेळा चाटवावे जुलाब थांबतात.

प्रयोग २८ वा

गजकर्ण रिंगवर्म

मनशीळ रॉकेलतेलामध्ये खलून तो गजकर्ण झालेल्या जागेवर चोळून जिरवावे म्हणचे गजकर्ण हटकून बरे होते.

प्रयोग २९ वा

मूळव्याध, पाईल्स

मूळव्याधीवर मलम - हिरा हिंग + नवसागर + सज्जीखार यांचे वस्त्रगाळ चूर्ण करून ते २१ वेळा धुतलेल्या लोण्यांत खलावे. खल तांब्याच्या परातीत तांब्याच्या पंचपात्रीने करावा. या मलमाने मूळव्याधीचे मोड जातात. हा प्रयोग वैद्याच्या देखरेखी खालीच करावा.

प्रयोग ३० वा

दमा-अस्थमा

कृति : - शुद्ध कुचला + लेंडीपिंपळी + लवंग, ज्येष्ठमध या सर्व औषधांचे वस्त्रगाळ चूर्ण समभाग घेऊन त्याचा बेहेड्याच्या काढयांत १२ तास खल करावा व एकेक गुंजेची गोळी बांधावी.

प्रमाण :- १ गोळी दिवसांतून २ वेळ. सकाळी गायीच्या तुपामधून सायंकाळी गायीच्या दुधाबरोबर घ्यावी. या औषधाच्या सेवनाने, अरुची, मंदाग्री, पाठीत दुखणे, पाठीला व कंबरेला कळा लागून येणे. पोटांत

गुबारा धरणे बद्धकोष्ठ; आमवृत्ती इत्यादि लक्षणांनीयुक्त असलेला कफज श्वास थोड्याच दिवसांत नाहीसा होतो.

प्रयोग ३१ वा

सुलभ नेत्रामृत

कृति :-

- १) बाळहिरडे चूर्ण १ आणाभर
- २) निर्मळीचे बी २ तोळा,
- ३) समुद्र फेस १ तोळा.
- ४) तुरटीची लाही २ तोळा
- ५) भीमसेनी कापूर १ आणाभार

प्रथम निर्मळीच्या बियांचे बारीक तुकडे करून ते अर्धाशेर पाण्यांत दोन दिवस भिजत ठेवावे.

नंतर वरील सर्व औषधांचे चूर्ण करून ते पाण्यांत टाकावे व ते चांगले मिसळून २४ तास भिजत ठेवावे. नंतर गाळून (फडक्याने किंवा फिल्टर पेपरने) बाटलीत भरून ठेवावे. रोज २/३ वेळ डोळ्यांत याचे थेंब टाकल्याने सर्व नेत्र रोगांत आराम पडतो.

प्रयोग ३२ वा

न्युमोनिया

कबूतरांची बीट (विष्टा) १ तोळा + पाणी एकशेर कल्हईय्या नीट गाळून बाटलीत भरून ठेवावे. व त्याचे चार टक करावे. हा एकेक टक भांड्यात अगर मातीच्या मडक्यांत टाकून आटवावे. राहिल्यावर कपड्याने चार चार तासांनी घावा. म्हणजे न्युमोनिया झालेल्या रोग्यास एकाच दिवसांत आराम पडेल.

प्रयोग ३३ वा

मलावरोध, बद्धकोष्ठ, कॉन्स्टिपेशन

१) शेंगदाण्याचे कूट

२) एक केळे (हिरव्या सालीचे)

एकत्र करून त्याचा लाडू रात्री झोपतांना खावा म्हणजे शौचाला साफ होते.

प्रयोग ३४ वा

निवडुंगाच्या चिकाचे थेंब अंदाजे ४ ते ५ + भाजलेल्या चण्यांच्या डाळीच्या पिठांत टाकून त्याच्या हरबयाएवढ्या गोळ्या कराव्या या गोळ्या रात्री झोपतांना घ्याव्या. शौचास साफ होऊन भूक लागते. वात सरतो, पचन सुधारून शक्ति येते.

प्रयोग ३५ वा

इंद्रिय शैथिल्य, सेक्स्युअल डेबिलिटी

१) पारा गंधकाची कजली ३)स्वाहागी

२)कबूतराची विष्ठा ४)मध

एकत्र खलून हे मलम एका बाटलीत भरून ठेवावे.
व त्याचा इंद्रियावर लेप करावा. याने कामवासना पुन्हा
जागृत होते.

प्रयोग ३६ वा

सर्पदंश - स्नेकचाईट

१)केळ्याची पाने अडीच तोळे

२) तुरटी अर्धा तोळा

३)काळी मिरे तीन नग

हे सर्व वाटून दहा तोळे पाण्यांत सरबताप्रमाणे
मिश्रण तयार करावे व ते सर्पदंश झालेल्या रोग्याला
द्यावे.

रोगी बेशुद्धावस्थेत असेल तर तोंड, नाक, कान
यांच्या वाटे द्यावे. असे दर अर्ध्या तासाने देत जावे.
मिश्रण देत असतांना रोग्याच्या डोक्याव थंडपाण्याची
धार चालू ठेवावी.

हे जर शक्य नसेल तर पाच पाच मिनिटांनी केळीची फांदी कापून त्याचा रस पाजीत जावा व थंडपाण्याची डोक्यावर धार धरावी.

प्रयोग ३७ वा

उपदंश-गर्मी-सिफिलिस

कृति :-

- १) रसकापूर शुद्ध केलेला १ तोळा
- २) मोरचूद लाही २ तोळे,
- ३) बाळहिरडे चूर्ण ४ तोळे

याला ५० लिंबांच्या रसाच्या भावना देऊन चांगले खळून त्याच्या तुरीएवढ्या गोळ्या कराव्या.

प्रमाण :- दररोज एकेक गोळी सकाळ सायंकाळ बर्फाच्या तुकड्यांतून घ्यावी. दाताला स्पर्श होऊ देऊ नये.

पथ्य- गव्हाची चपाती तूप, याप्रमाणे सात दिवस औषध घ्यावे.

प्रयोग ३८ वा

बदावर मलम :-

१) मलई २) सेंदूर

यांचे मिश्रण करून त्याचे मलम बदावर लावावे.

प्रयोग ३२ वा

कर्ण बाधिर्य डेफनेस

बेलफळे गोमूत्रांत वाटून त्याच्या कल्कांत पाणी + दूध + तेल टाकून ते सिद्ध करावे. हे तेल रोज नियमाने कानांत टाकल्यास ऐकायला कमी येत असल्यास श्रवणशक्ति सुधारते.

प्रयोग ४० वा

कर्ण शूल

१) सुंठीचे चूर्ण २) मध ३) तिळाचे तेल एकत्र करून गरम करावे व त्याचे चार थेंब कानांत टाकावे म्हणजे होणाऱ्या वेदना, ठणका, थांबतो.

प्रयोग ४१ वा

कर्णस्त्राव

जाईच्या पानाच्या रसांत तिळाचे तेल सिद्ध करावे व ते रोज कानांत घालावे. त्याने कानांतून पू येण्याचे थांबते.

प्रयोग ४२ वा

कायाकल्प करणारे श्रीसिद्धि मोदक

- | | |
|------------------|-----------------------|
| १)सुंठ १२ तोळे | ६)आवळकंठी १२ तोळे |
| २)मिरे १२ तोळे | ७)वावडिंग ८ तोळे |
| ३)पिंपळ १२ तोळे | ८)पिंपळमूळ ८ तोळे |
| ४)हिरडा १२ तोळे | ९)लालचित्रकमूळ ८ तोळे |
| ५)बेहेडा १२ तोळे | १०)गुळवेल ८ तोळे |

सर्वांचे वस्त्रगाळ चूर्ण करून जुना गूळ अडीच शेर घेऊन त्यात कालवावा व ३६० लाडू करावे. रोज सकाळी १ लाडू खावा व थंडपाणी प्यावे. नियमाने एक वर्ष घेतल्यास कायाकल्प होतो.

प्रयोग ४३ वा

नारू-गिनी वर्म

तुरटीची लाही १ मासा दिवसांतून २ वेळ ३।४ दिवस खायला द्यावी. नवीन नारू झालेल्या रोग्यांना हमखास गुण येतो.

पथ्य :- मीठ अजिबात खायला देऊ नये.

प्रयोग ४४ वा

गण्डमाला नाशक लेप

कृति :

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १) मुळ्याचे बी ५ तोळे | ४) जव ५ तोळे |
| २) सनईचे बी ५ तोळे | ५) सुहांजनाचे बी ५ तोळे |
| ३) सरयू ५ तोळे | |

या सर्व औषधांचे चूर्ण करून बाटलीत भरून ठेवावे.

उपयोग : आंबट दह्यात वरील चूर्ण कालवून त्याचा लेप गंडमाळेच्या गाठीवर करावा.

म्हणजे गाठी बसून जातात.

प्रयोग ४५ वा

गंडमाळा

कृति : उंदराचे कातडे व आतडे काढून टाकावे. व मांस खलामध्ये टाकून चांगले घोटावे. नंतर चार मासे कलमी सोरा टाकावा व पुन्हा चांगला खल करावा. जेव्हा सर्व लगदा गोळ्या करण्याला योग्य असा होईल तेव्हा त्याच्या १४ गोळ्या कराव्या.

उपयोग : रोज १ गोळी सकाळी थंड पाण्याबरोबर घ्यावी असे १४ दिवस करावे. म्हणजे गंडमाळा बरी होते.

प्रयोग ४६ वा

बाह्योपचार : तिळाच्या तेलात उंदीर तळून ते तेल गंडमाळेवर चोळून रोज लावावे.

प्रयोग ४७ वा .

आंत्रपुच्छ दाह, अपेडिसायटिस

१) सज्जीखार ५ तोळे २) खवा २० तोळे

एकत्र खलून त्याच्या काटबोरा एवढ्या गोळ्या कराव्या व बाटलीत भरून ठेवाव्या.

प्रयोग : रोज १ गोळी १ कप दुधात चुरून टाकावी व दूध उकळी येईपर्यंत तापवून प्यायला घ्यावे. एक महिन्यात रोगी बरा होतो. दर तीन दिवसांनी नारायण तेलाचा अनुवा-

सन बस्ति द्यावा.

प्रयोग ४८ वा

लठ्ठपणा : ओबेसिटी

१) त्रिफलाचूर्ण ५ तोळे ४) मिरे ५ तोळे

२) शुद्ध गुग्गूळ ५ तोळे ५) पिंपळी ५ तोळे

३) सुंठ ५ तोळे

समभाग घेऊन त्याच्या गोळ्या कराव्या व त्या १
३ मासे याप्रमाणे सकाळ सायंकाळ दोनवेळ घ्याव्या व
त्यावर मध-पाणी १ ग्लास प्यावे.

प्रयोग ४९ वा

क्षय ट्यूबरक्युलोसिस

पांढऱ्या दूर्वाचे चूर्ण १ तोळा गाईच्या किंवा
बकरीच्या अदपाव दुधा बरोबर दोन दोन तासांनी घ्यावे.
दिवसातून सहा वेळ. भूक वाढू लागली म्हणजे चूर्णाचे
प्रमाण प्रत्येक वेळी २-३ ते ४ तोळ्यावर न्यावे. व
त्याचप्रमाणे दुधाचे प्रमाणहि वाढवावे. दुधात साखर
मात्र टाकू नये. हा क्षयावर अद्भुत परंतु अनुभूत प्रयोग
आहे.

प्रयोग ५० वा

मोठा चांगला पुष्ट खेकडा घेऊन त्याला मडक्यात
टाकून तोंड बंद करावे. मात कापड करून त्याला चहू
बाजूने अग्नी देऊन त्याचे भस्म करावे,

ते पांढरे शुभ्र होते. तसे न झाल्यास पुन्हा अग्नी
देऊन भस्म करावे. हे भस्म २ गुंजा + मध १ तोळा +
लोणी २ तोळे, एकत्र करून चाटवावे. व वरून साखर

न घातलेले दूध प्यावे. क्षयावर हा एक अद्भुत परंतु अनुभूत प्रयोग आहे.

प्रयोग ५१ वा

दंत शूल

दंत शूलघ्न चूर्ण :

- | | |
|------------------|------------------------|
| १) तुरटी ३ तोळा | ४) मायफळ ३ तोळा |
| २) मोरचूद २ तोळा | ५) समुद्रफेस ३ तोळा |
| ३) काथ ३ तोळा | ७) रुमा मस्तंगी १ भाग. |

६) त्रिफळाचूर्णाचा कोळसा ३ तोळा

या प्रमाणे सर्व औषधे घेऊन त्याचे चूर्ण करून ठेवावे

प्रमाण : १ मासा चूर्ण + १ तोळा मीठ + १ रत्तल पाणी टाकून चूर्ण तळाला बसेपर्यंत

उकळावे. व दिवसांतून २ वेळ तरी या प्रमाणे १। १ रत्तल पाण्याचा चूळ भरण्यासाठी उपयोग करावा.

गुणधर्म : तोंड येणे, हिरड्या सुजणे; इत्यादि दाताच्या व तोंडाच्या सर्व विकारावर हे गुणकारी आहे.

पायोरिया

पायोरियांत हेच चूर्ण मधात कालवून त्याने दात व

हिरड्या घासाव्या याने हिरड्यातून रक्तस्राव व पू
येण्याचे थांबते.

रक्तस्राव हेमरेज

रक्तस्राव थांबविण्यासाठी याच चूर्णाचा बर्फाच्या
पाण्यातून मिठासह किंवा कोरडा उपयोग करावा.

प्रयोग ५२ वा

वेदना आणि शोथहारी गुटिका

कृति :

१) मोरचूद १ भाग ३) बाळहिरडा ४ भाग

२) कलमी सोरा २ भाग ४) आवळकंटी ८ भाग

या सर्व औषधांचे चूर्ण करून त्याच्या पाण्यांत
गोळ्या कराव्या व सुकवून बाटलीत भरून ठेवाव्या.

उपयोग: पाण्यांत उगाळून सूज आलेल्या जागी
गालावर लेप लावावा. सुकल्यावर शेक करावा. याने
दाढ दुखी थांबते. वेदना आणि सूज उतरते.

प्रयोग ५३ वा

एक प्रभावी दंतमंजन

१) हिरडा

९) पादेलोण

२)बहेडा १०)बिडलोण

३)आवळकंठी ११) पतंग

४)सुंठ १२)माजूफळ

५)मिरे १३) वांवडिंग

६)पिपळी १४)मीठ

७)तूतिया १५) कंकोळ

८)सैंधव १६) दालचिनी

या सोळा औषधांच्या चूर्णाने दांत घासल्यास ते मजबूत व रोगहित होतात.

प्रयोग ५४ वा

आकडी, कनकलशान्स

(१) वेखंड + बडिशोप + साखर + तूप असे चाटण मुलाला वारंवार चाटवावे. चोळावा.

(२) तीन चार दिवस एरंडेल देऊन कोठा शुद्ध करावा.

(३) सुरवारी हिरडा थंड पाण्यांत उगाळून मुलांचे हिरड्यास व जिभेला

ब्रोमाईड युक्त औषधे देऊ नये त्यांच्या अति सेवनाने मूल वेडे होते.

प्रयोग ५५ वा

| | |
|-----------------------------|-------|
| कृति:- माक्याचे केशरंजन तेल | ५ तोळ |
| माक्याचा कुटून काढलेला रस | ५ तोळ |
| जास्वंदीच्या फुलांचा रस | ५ तोळ |
| शुद्ध निर्भेळ तिळाचे तेल | ५ तोळ |
| दूध | ५ तोळ |

लोखंडाच्या कढईत तेल शिल्लक राहीपर्यंत मंदाग्रीवर उकळावे,तेल गाळून घेतल्यावर हिराकस ४ ग्राम गंधाबिरोजा खडे ४ ग्राम तगर गठोणा ४ ग्राम ही द्रव्ये बारीक करून घालावी. सुवास यावा म्हणून पांच, मरवा, दवणा या पैकी कोणतेहि एक द्रव्य ४ ग्राम टाकावे.

उपयोग :- हे माक्याचे केश रंजन तेल अद्भुत गुणकारी आहे. याने पांढरे झालेले केस काळे होतात. गळून पडणारे केस गळण्याचे थांबतात. केस लांबसडक व मऊ होतात, आजारानंतर गेलेल्या केसावर उत्तम उपयोग होतो.

जाई " व नुकतेच पडू लागलेले " टक्कल यावर हे

केस चोळल्याने फायदा होतो. व केस नवे येऊ लागतात. हे केस रंजन तेल कलप म्हणूनहि वापरतात.

प्रयोग ५६ वा

श्वास - डिस्त्रिया

एका मलाई हरबऱ्या एवढा हिंग टाकून सकाळ सायंकाळ २ वेळ घ्यावा.

प्रयोग ५७ वा

आम्ल पित्त-ऑसिडिटी

१)आवळकंठी चूर्ण २० तोळे

२)खडी साखर २० तोळे

एकत्र करून डब्यांत भरून ठेवावे व दिवसांतून ४। ५ वेळ २१२ चमचे या प्रमाणे खाऊन आठ दिवसांत सर्व संपवावे.

प्रयोग ५८ वा

१) हिरडा २) बेहेडा ३)आवळकंठी लोहभस्म समभाग (चूर्ण) घेऊन एकत्र करून ठेवावे जेवणापूर्वी १ मासा चूर्ण १ तोळा मधातून चाटावे.

प्रयोग ५९ वा

स्वप्नावस्था-नाइट डिस्चार्जेस

१)उट कटारीचे मूळ २)गोखरू ३)कवचचीज यांचे समभाग चूर्ण १ तोळा दुधांत शिजवून रोज २ वेळ घ्यावे.

प्रयोग ५० वा

निद्रानाश-इन्सोमनिया

जायफळ + कापूर उगाळून कपाळावर व पापण्यांवर रात्री झोपण्यापूर्वी लेप करावा. हुरमल चूर्ण ४ गुंजा मधांतून रात्री झोपण्यापूर्वी चाटवावे.

प्रयोग ६१ वा

रक्तदाब-ब्लड प्रेशर

हायब्लड प्रेशरवर अनुभूत काढा :-

१)गुळवेल ६ मासे ५) बाहवामगज ३ मासे

२) धमासा ४ मासे ६) सुंठ ३ मासे

३) रक्तचंदन ३ मासे ७) धणे ३ मासे

४)कडुपडवळ ३ मासे ८) पाणी ४० तोळे

यांचा काढा करावा सकाळ दुपार सायंकाळ घ्यावा.

रात्री झोपतांना ओवाचूर्ण १ मासा + सैंधव ४ गुंजा गरमपाण्यांतून घ्यावे. रात्रीचे जेवण बंद करावे.

प्रयोग ६२ वा

वातघ्न वटी स्पप्रदीपा

डिकेमाली ६ भाग + ओवाचूर्ण ४ भाग सुंठ चूर्ण १ भाग यांच्या आठ गुजेची एक गोळी याप्रमाणे गोळ्या कराव्या व रोज ३ गोळ्या रात्री झोपतांना.. गरम दुधाबरोबर घ्याव्या. पचनाच्या सर्व तक्रारी दूर होतात व स्वप्नावस्था थांबते.

प्रयोग ६३ वा

मधुमेह — डायबेटिस Diabetes

आवळकंठी + हळद यांचे समभाग चूर्ण १ चमचा दिवसांतून ४ वेळ घेणे -११-कडुनिंबाची पाने २१ + काळी मिरे नग ७ यांची चटणी सारखे वाटून केलेली गोळी खावी

किंवा त्याचे सरबत करून रोज सकाळी प्यावे. रोज सकाळ सायंकाळ १ मैल फिरायला जावे.

प्रयोग ६४ वा

कावीळ-जाँडिस

१)हिरडा

५)कुटकी

२) बेहेडा

६) कडुर्निबाची साल

३) आवळकंठी

७) किराईत

४) गुळवेल

८) अडुळसा

यांचा काढा मध टाकून सकाळ सायंकाळ रोज दोन वेळ प्रमाणे ४ दिवस घ्यावा. कावीळ बरी होते.

प्रयोग ६५ वा

आंव - डिसेंद्री

मायफळ चूर्ण ४ गुंजा + शंखजिरे चूर्ण ३ मासे लोण्यांत अगर तुपांत कालवून दिवसांतून २ वेळ चाटवावे. आव पडणे थांबते.

प्रयोग ६६ वा

बेलफळाच्या गिराचे चूर्ण अर्धा तोळा ताकांत कालवून दिवसांतून ३ वेळ घ्यावे.

प्रयोग ६७ वा

बुद्धिवर्धक-ब्रेनटॉनिक

१) आस्कंद

५) सुंठ

९) काळे जिरे

२) शंखपुष्पी

६) मिरे

१०) दारुहळद

३) पुष्करमूळ

७) पिंपळी

११) जिरे

४) सैंधव

८) वेखंड

१२) ओवा

या बारा औषधांचे चूर्ण समभाग घेऊन त्याला ब्राह्मीच्या रसाच्या भावना द्याव्या व चण्याएवढ्या गोळ्या कराव्या. सुधारते. अनुभूत प्रयोग आहे.

रोज सकाळ सायंकाळ १ गोळी घेतल्याने ३ महिन्यांत स्मरणशक्ति

प्रयोग ६८ वा

मालीशसाठी अनुभूत तेल

पिंपळी + दारुहळद + शोपा + पुनर्नवा + सोहांजनाची साल + कुटकी + करंजबीज + काळेजिरे + पांढरी मोहरी + वेखंड + सुंठ + मुरड पिंपळी + चित्रकमूळ + निर्गुडीचा पाला + अर्जुनसाल + ओवा + आवळकाठी + लवंग

सर्व द्रव्ये प्रत्येकी पाच तोळे घेऊन भरड कुठून पाच लिटर पाण्यात रात्री भिजत टाकावी.

सकाळी ५ लिटर तिळाचे तेल टाकून मंदाग्रीवर पाणी आटेपर्यंत उकळावे व नंतर गाळून उपयोगांत आणावे हे तेल सर्व प्रकारच्या वातरोगावर मालीशसाठी उत्तम असून अनुभूत आहे.

प्रयोग ६९ वा

आस्थिभंग फॅक्चर

- (१) गुगुळ ५ तोळे ७) देवदार - १-तोळा
२) लाल तुरटी ७ ॥ तोळे ८) पिंपळी ३ नग ,
३) अबिहळद ॥ तोळा ९) सज्जीखार २ गुंजा
४) मैदालकडी - १- तोळा १०) शेंदूर - १- तोळा ,
५) पिंपळमूळ - १- तोळा ११) मध २ तोळे
६.) कचूर - १- तोळा १२) देशी दारू अगर
स्परिट २ ॥ तोळे.

सर्व औषधे कुटून वस्त्रगाळ करावी व नीट घोटून लेप तयार करावा ब जेथे दुखत असेल तेथे लावावा.

हाडाला मुका मार बसने सूजगे-मोडगे- पांथेदुखी-सूज इत्यादि लक्षणे होत असतांना या लेपाचा चांगला उपयोग होतो. सूज नाहीशी होते.दुखणे कमी हो. हाड मोडले अयास जुटून येते. शेकडो रोग्यांना फायदा झाला आहे.

प्रयोग ७० वा

अंडवृद्धी हैड्रोसील

बाह्योपचार :- एका मोठ्या फडक्याला कच्चे मेण लावून ठेवावे व त्या फडक्यांतून रोज हवे तेवढे फडके फाडून घेऊन ते अंडकोत्राभोवती गुंडाळून पट्टा बांधत जावा. कपड्याला 'गंधाबिरोजा' लावून त्याची पट्टी अंडकोषाला चिकटवावी. तीन दिवसांनी पुन्हा नवीन पट्टी बसवावी.

प्रयोग ७१ वा

आग्निदीपक वटी

पोटांतून :-

- | | |
|----------|----------|
| १)सुंठ | ४) हिरडा |
| २)मिरे | ५)बेहेडा |
| ३)पिंपळी | ६)आवलकठी |

यांचा काढा करून त्यांत जवखार व सैंधव ४ गुंजा टाकून २ वेळ घ्यावा.

प्रयोग ७२ वा

कृति :-

- | | | |
|-----------|--------------|-------------|
| १) हिरडा | ३) आवळकंठी | ५) अजमोदा |
| २) बेहेडा | ४) चित्रकमूळ | ६) काळेजिरे |

७)पांढरे जिरे ८) सैंधव मीठ

प्रत्येकी ४ तोळे घेऊन त्यांत अमरवेलीचा रस १० शेर टाकावा व ते सात दिवस भिजत ठेवावे.

आठव्या दिवशी मंदाग्रीवर आटवावे व ८ मासे शौक्तिक भस्म टाकून खल करावा व लहान बोराएवढ्या गोळ्या कराव्या. प्रमाण :- १ ते २ गोळ्या सकाळ सायंकाळ पाण्याबरोबर घ्याव्या. याने भूक वाढते व पचन सुधारते.

प्रयोग ७३ वा

स्तन दृढीकरण तेल

बाळंतपणाने सैल पडलेले, तसेच अशक्तपणामुळे वाढ न झालेले खुरटे असे स्तन घट्ट व सुडौल होण्यासाठी सर्वांना घरी सहज करता येण्यासारखा हा शास्त्रोक्त असा पाठ आहे.

कृति :

- | | | |
|-------------|-----------|--------|
| १) प्रियंगु | ३) कुटकी | ५) हळद |
| २) वेखंड | ४) लाजाळू | |

ही सर्व द्रव्ये समभाग घेऊन त्यांच्या १६ पट तिळाचे तेल व तितकेच गाईचे दूध टाकून शास्त्रोक्त पद्धतीने तेल सिद्ध करावे. नियमाने सकाळ सायंकाळ या

तेलाने कुचमर्दन करावे. म्हणजे ते सुडौल व टणक होतात.

प्रयोग ७४ वा

अंग बाहेर येते

पुष्कळ स्त्रियांचा गर्भाशय योनीबाहेर येतो त्याला अंग बाहेर येते असे म्हणतात.

उपाय :- तिळाचे तेल लावून हळूहळू गर्भाशय आत ढकलावा व शेक करावा. नंतर दालचिनी + तमालपत्र + जायफळ यांची बारीक पूड घालून त्याची पुरचुंडी योनिमार्गात ठेवावी. आमचा अनुभूत योग आहे.

प्रयोग ७५ वा

सुलभ प्रसूतीसाठी

हेडकीच्या मुळ्या २॥ तोळे + ४० तोळे पाणी टाकून + काढा करावाव तो जुना गूळ टाकून द्यावा. म्हणजे सुलभ प्रसूती होते. गर्भस्त्राव जर पूर्ण झाला नसेल तर गर्भाशयात शिल्लक राहिलेला गर्भ पडून जाण्यासाठी हेडकीचे चूर्ण १ मासा तीन तीन तासांनी द्यावे. गर्भ पडून जातो व गर्भाशय शुद्ध होऊन बाईला आराम वाटतो. इतके हे गर्भ निघून जाण्यासाठी

अत्युत्तम औषध आहे. मात्र हे जपून वैद्याच्या सल्ल्याने वापरावे. दुरुपयोग करू नये.

प्रयोग ७६ वा

आर्तव शुद्धीकर योग

कृति :-

१)काळा बोळ , २)तांबडा बोळ , ३)शुद्ध हिराकसीस

समभाग घेऊन त्यांच्या दुप्पट गूळ टाकावा व १ माशाच्या गोळ्या कराव्या.

प्रमाण : रोज सकाळ सायंकाळ १ गोळी घ्यावी. एका महिन्यांतच विटाळ साफ येऊ लागतो. पाळीची तक्रार दूर होते.

प्रयोग ७७ वा

सुलभ प्रसूतीसाठी वात

रिठ्याची कुटून केलेली वात योनीमार्गात ठेविली असता बाळंतिणीची सुटका होते.

प्रयोग ७८ वा

जखमेवर मलम

कृति :

१)मेण २ तोळे

४)शेंदूर - ॥-तोळा

२)तिळाचे तेल ९ तोळे

५)राळ १ तोळा

३)भीमसेनी कापूर १ तोळा

सर्व औषधांचे चूर्ण करून तेलांत टाकावे व कढवून मलमाप्रमाणे झाल्यावर उतरून ठेवावे व बाटल्या भराव्या या मळमाची पट्टी जखमेवर बदावर-लाबावी उत्तम गुण येतो.

प्रयोग : ७९ वा

कुष्ठ नवनीत

कृति :

१)पारा - ॥-तोळा

४)भीमसेनी कापूर १ तोळा.

२)पांढरी स्वच्छ राळ १ तोळा ५)केशर १२ गुंजा

३)खोबरेल तेल ७ ॥ तोळे ६)मोरचूद ८ गुंजा

प्रथम कल्हईच्या परातीत प्रथम पारा व राळ घालून चांगले फेंसावे व पाण्याची धार धरावी व लोण्याप्रमाणे करावे. नंतर मोरचूत टाकून पुन्हा फेंसावे व रात्रभर झाकून ठेवावे. दुसरे दिवशी पुन्हा त्यांतील सर्व पाणी काढून टाकून इतर द्रव्ये टाकावी व फेसून एकजीव

करावी व डब्या भराव्या.

उपयोग : खरूज - गजकर्ण - नायटे-इसब इत्यादि
सर्व त्वकरोगांत हे मलम उत्तम गुणकारी आहे.

प्रयोग ८० वा

डांग्या खोकल्यावर गोळ्या

कृति :

१) प्रवाळ भस्म १ तोळा

२) गोदंती हरताळ भस्म २ तोळा

३) चौसष्टी पिंगळी २ तोळा

४) ज्येष्ठमधांचा शिरा १ तोळा

ही सर्व द्रव्ये अडुळशाच्या रसांत आठ तास खलून
२ गुंजेच्या गोळ्या कराव्या व मधांतून सकाळ-दुपार -
सायंकाळ ३ वेळ चाटवाव्या. म्हणजे डांग्या खोकला
बरा होतो.

प्रयोग ८१ वा

खरजेवर अनुभावक मलम

कृति :

१) करंजाचे तेल

३) कापूर

२) लिंबाचा रस

४) गंधक

या सर्व जिनसा समभाग घेऊन घोटून एकजीव कराव्या व खरजेवर हे मलम लावावयास द्यावे. इसब-गजकर्ण-यावर देखील याचा उपयोग होतो.

प्रयोग ८२ वा

दम्यावर अद्भुत प्रयोग

हरमल चूर्ण ८ गुंजा मघांतून - दिवसांतून ४ वेळ चाटवावे दमा, श्वास व सर्व प्रकारच्या वातज विकृतीत उत्तम व सोपे औषध आहे.

प्रयोग ८३ वा

केसांच्या वाढीसाठी

सागाच्या बियांचे चूर्ण ऊन पाण्यात भिजत वेळी केसांना लावावे म्हणजे ज्यांच्या केसांची वाढ केस वाढू लागतात. लांबसडक व दाट येतात. घालून ते पाणी स्नानाचे खुंटली असेल त्या

प्रयोग ८४ वा

मुलींचे लहान मुलांचा कोल

कृति : बाळंतबोळ + डिकेमाली समभाग घेऊन त्याच्या १११ गुंजेच्या गोळ्या कराव्या व सकाळ, दुपार, सायंकाळ दुधाबरोबर याभ्या. गुणधर्म : याने शौचाला साफ होऊन मुले अंग धरू लागतात.

प्रयोग ८५ वा

महारोग गलत्कुष्टावर सुलभ योग

कृति: मेंदीचे पंचांग म्हणजे १ - पाने २ - फुले ३- फळे - साली ५ - मुळे यांचे भरडा चूर्ण ४ तोळे + ६४ तोळे पाणी टाकून टे काढा करावा व तो एकवेळ सकाळी घ्यावा.

पथ्य: मीठ वर्ज्य करावे. अलवणी. पोळी मुगाचे वरण तूप साखर असे खावे. असे एक वर्ष करावे. महारोग बरा होतो.

प्रयोग ८६ वा

शतावर्यादि चूर्ण

कृति :

१)शतावरी ३)गोखरु ५)कवच बीज

२)नागबला ४)बलबीज ६)तालीमखाना

हे सर्व सामग्री समभाग घ्यावे वस्त्रगाळा चूर्ण करावे ,

या सहा औषधांच्या चूर्णाला शतावर्यादि चूर्ण असे म्हणतात,

प्रमाण : १ ते तीन मासे चूर्ण तूप साखरेतून चाटून दूध साखरेबरोबर घ्यावे.

गुणधर्म : " न तृप्ति यातिनारीभिर्नरश्चूर्ण प्रभावत :
"याच्या सेवनाने पुष्कळ स्त्रिया भोगूनहि पुरुषाची तृप्ती होत नाही, तर पुन्हा पुन्हा संभोगाची इच्छा होते असा उत्तम वाजीकर परंतु सुलभ प्रयोग आहे.

प्रयोग ८७ वा

रतिवर्धन योग

कृति :-

- | | |
|--------------|---------------|
| १) आस्कंद | ४) ज्येष्ठमध |
| २) शतावरी | ५) सफेत मुसळी |
| ३) गोखरू | ६) कवचबीज |
| ७) तालीमखाना | ८) चिकणामूळ |

या आठ औषधांचे समभाग चूर्ण घेऊन ते तितक्याच तुपांत परतून घ्यावे, नंतर त्यांत आठपट दूध टाकून त्याचा मावा करावा व तो चूर्णाच्या सहापट साखरेच्या पाकात टाकून २१२ तोळ्यांच्या वड्या तयार कराव्या.

प्रमाण : ही एक वडी सकाळी व रात्री दुधाबरोबर रोज खावी. याने शुक्राची वाढ होऊन नपुसकत्व जाते.

प्रयोग ८८ वा

वीर्यशोधक वटी

घटक द्रव्ये :

- १) सुवर्ण माक्षिक भस्म १ तोळे
- २) चांदीचा वर्ख १ तोळे
- ३) वंग भस्म १ तोळे
- ४) प्रवाल पिष्टि १ तोळे
- ५) शुद्धशिलाजित १ तोळे
- ६) गुळवेल सत्व १ तोळे
- ७) भीमसेनी कापूर १ तोळे

सर्व द्रव्ये घोटून मुगाएवढ्या गोळ्या कराव्या. (भावना करीता थोडे गरम पाणी) प्रमाण: १ ते २ गोळ्या दिवसांतून २ वेळ दुधाबरोबर घ्याव्या.

गुणधर्म : या वटीचे नियमित सेवन केल्याने वीर्यदोष दूर होऊन "धातुस्थानांत आलेली उष्णता" नाहीशी होते. "वीर्य स्तभन शक्ति" वाढते. शुक्राशय. व शुक्रवाहिन्यामध्ये झालेला वातप्रकोष व "इंद्रियाला" आलेले शैथिल्य" नाहीसे होते.

प्रयोग ८९ वा

रक्तदाब हायब्लड प्रेशर

कृति:

१)ओव्याचे फूल २ तोळे

२)गुळवेळसत्त्व ८ तोळे

चांगले घोटून कोर फडीच्या रसांत मुगाएवढ्या गोळ्या कराव्या.

प्रमाण: २ गोळ्या दिवसातून ३ वेळ दूध खडीसाखरेबरोबर घ्याव्या.

प्रयोग ९० वा

केशवधर्क तेल

घटकद्रव्ये:

१) ब्राह्मी रस १ रत्तल , २)माका रस १ रत्तल ,

३)खोबऱ्याचे तेल १ रत्तल, ४)जास्वंदीचा रस १ रत्तल

कल्क: हिरडा, आवळकठी, नीळ, बावच्या, बडाच्या पारंब्या, थाळा, गव्हाला, कचोरा, नागरमोथा, जटामांसी, लोहकिट्ट.हीं सर्व द्रव्ये एकत्र वाटून टाकावी व मंदाग्रीवर तेल सिद्ध करावे व गाळून बाटल्यांत भरून ठेवावे.

गुणधर्मः केसांची गळती थांबते; केस बाहू लागतात व काळे होतात

प्रयोग ९१ वा

पोटदुखीवर गोळ्या

कृति : रिठ्याचा मगज + सागरगोट्याचा मगज त्याच्या निम्मे हिंग व काळे मीठ (पादेलोण) घालून आल्याच्या रसांत चण्याएवढ्या गोळ्या कराव्या.

प्रमाण : २ गोळ्या दिवसांतून ३ वेळ ऊन पाण्याबरोबर घ्याव्या. कसलीही पोटदुखी थांबते.

प्रयोग ९२ वा

धनुर्वात

वेखंड + सुंठ + जिरे यांचे चूर्ण तुपांत परतून त्याच्या गुळांत बोराएवढ्या गोळ्या कराव्या व त्या धनुर्वात झालेल्या रोग्याला दिवसांतून ३ वेळऊन. पाण्याबरोबर घ्याव्या.

प्रयोग ९३ वा

प्रदर ल्यूकोरिया

पळसाचा डिंक पिकलेल्या केळ्यांत रात्री घालून ठेवावा व सकाळी केळ्यासह खावा. याप्रमाणे ७-१४-२१ दिवस आवश्यकतेप्रमाणे औषध घ्यावे

प्रयोग ९४ वा

विषूचिका-कॉलरा

जुनी चिंच + सोडलेली लसूण (ताकात भिजत ठेवून) + चिच्या सारख्या प्रमाणात घेवून घोटून वाटाण्या एवढ्या गोळ्या करून ठेवाव्या. दर १२-१५ मिनिटांनी १-१ गोळी कांयाचे २ चमचे रसाबरोबर याची म्हणजे कॉलरा निश्चित बरा होतो. रोगी दगावत नाही. एका धर्मार्ध औषधालयातर्फे हवा गोळ्यां दरसाल हजारो लोकांना मोफत वाटण्यांत येतात व त्याने हजारो लोकांचे प्राण वाचलेले आहेत.

प्रयोग ९५ वा

आग्निदग्धव्रण-चर्न्स

चुन्याच्या निवळीत तितकेच खोबरेल तेल घालून ते मिश्रण बाटलीत भरून ठेवावे व भाजलेल्या जागेवर लावावे.

प्रथमोपचार म्हणून प्रत्येक घरांत हे मिश्रण तयार करून ठेवणे हितवाह आहे कारण सध्याच्या काळांत स्टोव्हमुळे भाजण्याच्या तक्रारी शेकडोच्या संख्येने रोज ऐकू येत असतात. त्यांवर हा सुलभ उपाय उत्तम गुणकारी असा आहे.

प्रयोग ९६ वा

चंदनी सरबत

१)चंदनाचा बारीक चुरा १० तोळे , २)गुलाब पाणी ८० तोळे हे मिश्रण २४ तास भिजत ठेवावे नंतर ते पाणी मंदाग्रीवर उकळी फुटेपर्यंत ठेवावे. व नंतर खाली काढून गाळून त्यात १ शेर खडी साखर टाकाची व चांगला पाक करावा.

हे चंदनी सरबत गर्भिणी-बालके अशक्त प्रकृतीच्या व कडकी उष्णता झालेल्या स्त्री पुरुषांनी थंडाई येण्यासाठी सकाळ संध्याकाळ १११ तोळा घ्यावे आराम वाटतो.

प्रयोग ९७ वा

मुखपाक तोंड येणे

त्रिकळा+दारु हळद+जाईचा पाला यांचा काढा करावा व मध घालून त्याने गुळाण्या कराव्या म्हणजे तोंड आले असल्यास बरे होते.

प्रयोग ९८ वा

शरीरावरचे काळे डाग

शरीरावर काळे डाग पडतात व त्यामुळे शरीर विद्रूप दिसते. अशावेळी हे डाग जाण्यासाठी सोपा सुलभ व

घरगुती उपाय म्हणजे डाग पडलेल्या जागेवर कथल्या गोंद उगाळून लावावा. म्हणजे डाग नाहीसे होतात.

प्रयोग ९९ वा

कडकी व रक्तशुद्धीवर ज्येष्ठमधादि चूर्ण

ज्येष्ठमधादि चूर्णाची कृति:

१)ज्येष्ठमध चूर्ण २ तोळे

२)बडीशेप चूर्ण २ तोळे

३)शुद्धगंधक १ तोळा (तुपांत तळून वस्त्रगाळ केलेली)

४)सोनामुखी १ तोळा

५)खडी साखर ६ तोळे

यांचे चूर्ण चांगले मिश्र करून भरून ठेवावे..

प्रमाण: रोज रात्री झोपतांना १ चमचा चूर्ण ऊन पाण्याबरोबर घ्यावे. याने शौचाला साफ होते. भूक लागते. कामाला उत्साह येतो. व अंगांत भरलेली कडकी उष्णता नाहीशी होते.

प्रयोग १०० वा

पीनसावर सुलभ योग

सबजाचा रस + तूप समभाग घेऊन त्यांत थोडा
भीमसेनी कापूर टाकवा. व ते मिश्रण चांगले घोट्यावे.

याचे १० थेंब रोज सकाळ सायंकाळ दोन वेळ
नाकांत टाकावे म्हणजे पीनस दोन महिन्यात साफ बरे
होते.

आयुर्वेद बृहस्पती गोपाळशास्त्री गोडबोले यांचे

कॅन्सरवरील चिकित्सा प्रयोग

१) सूरणकंद जाळून त्याचे भस्म तूप आणि गुळात
कालवून त्याचा लेप कॅन्सरच्या गाठीवर दिल्यास गाठ
बरी होते असे हारीत संहितेत सांगितले आहे.

२) शरपुंखेची मुळे जेष्ठमधाच्या काढ्यात घोटून
त्याचा लेप कॅन्सरच्या गाठीवर घ्यावा मात्र तत्पूर्वी
जळवा लावून रक्त मोक्षण करून घ्यावे म्हणजे कॅन्सरची
गाठ बरी होते.

३) कॅन्सरच्या गाठीला निवडुंगाच्या काढ्याने स्वेद
द्यावा म्हणजे कॅन्सरची गाठ बरी होते.

४) लवणस्वेद हा कॅन्सरवर गुणकारी आहे. या
तिन्ही द्रव्यांनी स्वेद दिल्यानंतर हळद मूलकक्षार आणि
शंख चूर्ण एकत्र घोटून त्याचा लेप कॅन्सरच्या गाठीवर
द्यावा या लेपाचा परिणाम सात दिवसात दिसून येतो.

५) अत्तीण्डीकाचे उत्तर दिशेकडील मूळ शास्त्रोक्त पद्धतीने वनातून काढून आणावे आणि थंड पाण्यात उगाळून त्याचा लेप कॅन्सरच्या गाठीवर द्यावा म्हणजे कॅन्सरची गाठ बरी होते.

कुच कठोर तेल

गोरखमुंडीचे पंचाग व लेडी पिंपळी समभाग घेऊन ती पाट्यावर वाटून त्याचा चटणीसारखा गोळा करावा व तो चौपट तिळाच्या तेलात टाकून तेलाच्या चौपट पाणी टाकावे व तेल शिल्लक राहीपर्यंत मंदाग्रीवर उकळावे. नंतर बाटलीत भरून ठेवावे.

या तेलात कापूस भिजवून तो स्तनावर ठेवावा तसेच या तेलाचे नस्य द्यावे म्हणजे ढिले पडलेले स्तन पुष्ट व टणक होतात. स्तन दृढीकरणार्थ हा प्रयोग सुलभ असल्याने सौंदर्य प्रसाधनासाठी व शरीर सौष्ठवासाठी स्त्रियांना उपयुक्त आहे.

थोडक्यात सांगायचे म्हणजे निसर्गाने मानवाला आरोग्य रक्षणासाठी मुक्त हस्ताने व मुबलक प्रमाणात दिलेली गोरखमुंडी हे एक वरदानच आहे. अशी ही अल्पमोली बहुगुणी वनस्पती सध्या भरपूर उगवते आहे. तिचा उपयोग सर्वांनी जरूर करावा.

दमेकऱ्यासाठी औषधी विड्या

दम्याची धाप सुरु झाली. जीव कासावीस होऊ लागला म्हणजे रोगी बेचैन होतो. वैद्य डॉक्टरांना बोलावून इंजेक्शन गोळ्या घेण्यासाठी धावपळ सुरु होते. नाकात पंपाने हवा भरण्याचा प्रयत्न केला जातो. ही सर्व यातायात टाळण्याचा सुलभ उपाय दमा विडी होय.

दमा विडी कशी करावी ?

घटक द्रव्ये व कृती : सावलीत वाळलेली अडुळशाची पाने चार भाग, काळा चहा दोन भाग, खुरासनी ओव्याची पाने दोन भाग या सर्वांचे जाडे चूर्ण करून कलमी सोन्याच्या तृप्त द्रवात भिजवून सावलीत वाळवून ठेवावे.

जरूर पडेल तेव्हा जाड कागदात त्याची विडी करून धूम्रपान करण्या. करता दमेकरी रुग्णास द्यावी.

गुणधर्म : दमेकऱ्याला या धूम्रपानाने तात्काळ आराम वाटतो त्रास होत नाही.

महत्वाची सूचना

धूम्रपानाने जर डोके गरगरले, चक्कर येते असे वाटू लागले तर धूम्रपानानंतर थोड्या वेळाने गार्डचे दूध प्यायला द्यावे.

टकलावर शास्त्रोक्त योग

हत्तीचा दात अंतर्धूमं पद्धतीने जाळून त्याची काळी राख रसाजन म्हणजे दारूहळदीचा शिरा व तिळाचे तेल एकत्र घोटून एकजीव करावे व त्याचा लेप टकलावर घावा म्हणजे पुन्हा केस उगवतात. हा आमचा अनुभूत योग आहे.

डोळ्यांच्या साथीवर !

रामबाण सुलभ योग !!

डोळे येणे हा एक साथीचा विकार आहे. घरात एकाला हा विकार झाला म्हणजे संसर्गाने त्याची बाधा सर्वाना होते खेड्यात आणि शहरात लाखो लोकांना होणारा हा विकार असल्यामुळे याच्या उपचारासाठी कोटयावधी रुपये खर्च होत असतील यात शंका नाही. सध्या औषध म्हटले म्हणजे ते एक तर दवाखान्यातून तरी आणायचे नाहीतर बाजारा- तून केमिस्टेच्या दुकानातून तरी आणायचे या शिवाय अन्य मार्ग नाही.

सध्याच्या राजा राणीच्या संसारात आजीबाईचा बटवा घरात आजीच नसल्याने उपलब्ध नाही. व खेड्यात पांडु तात्यांची वैद्यकी मेडिकल प्रॅक्टिश नर्स अॅक्टने उध्वस्त झाली आहे. त्यामुळे घरगुती उपचार हळू हळू इतिहास जमा होऊ लागले आहेत.

आयुर्वेदावर निष्ठा असलेले व आयुर्वेदीय शास्त्रोक्त उपचारांचा पुनः-प्रत्यय घेणारे वैद्य लोप पावू लागल्यामुळे सुलभ आयुर्वेदीय गुणकारी असे योग फक्त पुस्तकातच बंदिस्त होऊन पडले आहेत. अशा सुलभ योगांचा पुनःप्रत्यय घेऊन त्याची फलश्रुती जनते पुढे ठेवण्याचा प्रयत्न आरोग्य मित्र कार्यालयातर्फे करावयाचे आम्ही योजिले आहे. त्याची उपयुक्तता दिसून आल्यावर जनतेचे उत्स्फूर्त सहकार्य निश्चित मिळेल, अशी आमची दृढ श्रद्धा आहे.

योगरत्नांकरात डोळे येणे-नेत्रा भिष्यंद या रोगावर पुढील सुलभ उपाय सुचविला आहे.

वात पित्त कफ सन्निपातजां ।

नेत्रयोः बहुविधामपि व्यथाम् ॥

शीघ्रमेव जयति प्रयोजितः ।

शिग्रु पल्लव रसः स माक्षिकः ॥

वात पित्त-कफ या तीन प्रकारच्या किंवा सन्निपातज म्हणजे तिन्ही दोषांनी युक्त अशा विविध प्रकारच्या नेत्र विकारावर रामबाण व त्वरित गुणकारी योग म्हणजे शेवग्याच्या पाल्याचा रस व मध यांच्या मिश्रणाने रोज दोन वेळ अंजन करणे हा होय.

कै. पदेशास्त्री यांनी देखील आपल्या पुस्तकात नेत्र

विकारावर हे अंजन सुचविले आहे, परंतु दुर्दैव आमचे म्हणजे देवाने भरपूर शेवग्याची झाडे निसर्गात निर्माण करूनही आम्ही त्यांच्या शेंगांची भाजी करण्यापलिकडे त्याचा अन्य उपयोग कधीच केला नाही.

चार दिवसात डोळे बरे झाले

सोलापूरच्या शेठ सखाराम नेमीचंद जैन औषधालयात शरद ऋतूत जेव्हा पित्त प्रकोप होतो तेव्हा डोळ्यांच्या विकाराच्या एका रुग्णाला दवाखान्यात प्रवेश दिल्यावर एकामागून एक अशा अनेक रोग्यांचे डोळे येऊ लागले इतकेच नव्हे तर तेथे उपचार करणारे वैद्य म. वि. फडके हे देखील या संसर्गजन्य रोगाला बळी पडले, तेव्हा त्यांनी योगरत्नाकरातील वरील सुलभ योगाचा स्वतःवर आणि इतर रुग्णावर प्रयोग केला आणि आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे चारच दिवसात सर्वांचा रोग संपूर्ण बरा झाला.

पाचशे रोग्यांवरील यशस्वी योग

'त्यानंतर जवळ जवळ पाचशे रोग्यावर त्यांनी या सुलभ योगाचा प्रयोग केला व त्या सर्वांना आराम प्राप्त झाला आहे.

ज्या रोग्यांना डोळ्यांतील मलमे व इंजेक्शन वापरूनही गुण आला नव्हता. अशा रोग्यांना या सुलभ

चिकित्सेने शंभर टक्के गूण चार दिवसात दाखवला आहे ही एक विचार करण्यासारखी गोष्ट आहे

'महत्वाची सूचना : शेवग्याच्या पाल्याचा रस काढताना स्वच्छतेकडे विशेष लक्ष द्यायला हवे तसेच मध शुद्ध वापरला पाहिजे शुद्ध मध मिळणे ही फार बिकट समस्या आहे. आम्ही हिरड्याचा मध या योगात वापरतो कारण हिरडा हा चक्षुष्य आहे डोळ्याला द्वित्तकर असा आहे.भावी समाज

ज्या सेवा सेवकांना व संस्थांना निरपेक्ष बुद्धीने अशी रुग्ण सेवा करायची इच्छा असेल त्यांना आम्ही आवश्यक ते सहाय्य व मार्गदर्शन जरूर देऊ.

तुकाराम महाराजांनी म्हटल्याप्रमाणे एक मेका साह्य करू अवघे धरू सुपंथ.

निपुत्रिकांना पुत्रप्राप्तीसाठी

गर्भसंस्थापक शास्त्रोक्त प्रयोग

वंध्यत्व नाशक अनुभूत योग

कुटुंब नियोजनात संतती नियमना इतकीच हमखास संतती प्राप्तीच्या उपायांचीही आवश्यकता असते. लग्नाला अनेक वर्षे होऊनहि जर पुत्र प्राप्ती होत नसेल तर अशा भगिनीना पुढील गर्भ संस्थापक योग उपयुक्त असल्या मुळे गरजू भगिनीसाठी काहीही आड पडदा न

ठेवता येथे देत आहोत.

निपुत्रिकांना गर्भ संस्थापक योग

पाण्याचा पक्क नारळ घेऊन त्यात शंभरग्रॅम पळसाचा गोंद टाकावा व मात कापड करून पुटपाक द्यावा. अशा तऱ्हेने तयार झालेल्या भस्मात सम भाग खडीसाखर मिसळून ३ ते ५ ग्रॅम चूर्ण सकाळ सायंकाळ दुधाबरोबर घ्यावे. याने गर्भाशय शुद्ध होऊन गर्भधारणा होते, हा योग शास्त्रीय दृष्टी कोनातून कसा उपयुक्त व हमखास गुणकारी आहे , हे पुढील विवेचनावरून आमच्या सूझ वाचकांच्या सहज लक्षात येईल.

सोळा संस्कारांची उपयुक्तता

भारतीय संस्कृतीने जन्माला आलेल्या स्त्री पुरुषांना सोळा संस्कार करून घ्यावयास सांगितले आहे. हे सोळा संस्कार जन्मापासून मृत्यूपर्यंत निरनिराळ्या वयात निरनिराळ्या उद्देशाने सांगितले आहेत. त्यापैकी विवाहानंतर गर्भाधान ' हा एक संस्कार सांगितला आहे.

ओटी भरण्यास संस्कार व विधी

विवाह हा संस्कार वंशवृद्धीसाठी असल्यामुळे विवाहोत्तर गर्भधारणेसाठी गर्भाधान संस्कार सांगणे हे क्रम प्राप्तच येते. गर्भाधान संस्काराला लोक भाषेत 'वटभरण' ओटीभरण असे म्हणतात. हा वटभरण विधी

विवाहानंतर प्रथम जेव्हा स्त्री ऋतुस्नात होते. विटाळशी होते. बाहेर बसते तेव्हापासून सोळा दिवसाच्या आत करावयाचा असतो. कारण पाळी सुरू झाल्यापासून सोळा दिवस हे गर्भ धारणेला अनुकूल असतात.

बाल विवाहातील शास्त्रीय दृष्टी

पूर्वी ऋतुस्नात होण्यापूर्वी मुलीचे विवाह करीत असत. कारण असे केल्याशिवाय बापाला कन्यादानाचे पुण्य मिळत नाही अशी त्याकाळी धार्मिक समजूत होती. त्यामुळेच ' अष्टवर्षाभवेत् कन्या ' या शास्त्र वचनानुसार मुलींचे विवाह होत असत. याला शरीर शास्त्राचाही आधार आहे. तो आधार म्हणजे स्त्री ऋतुस्नात झाल्यावर नैसर्गिकच मैथुनेच्छा होत असते. अशावेळी ती जर विवाहित असेल तर तिला राजरोसपणे मैथुनाचा मार्ग मोकळा असतो त्याच्या उलट जर ती ऋतुस्नात होऊनही अविवाहित असेल तर नैसर्गिक शरीर धर्मानुसार होणारी मैथुनेच्छा पूर्ण करण्याचा विहित अगर अविहित मार्ग ती स्वीकारील. आणि मग तिला दोष देणे योग्य होणार नाही. अशा तऱ्हेने धर्मशास्त्र आणि आरोग्यशास्त्र यांच्या विचारसरणीतील एक वाक्यता या शास्त्रार्थात कुणालाही समजण्यासारखी आहे.

ओटीत नारळाच का घालतात

कालाच्या दृष्टीने ऋतुप्राप्तीनंतर स्त्री शरीरात गर्भ-

धानाला योग्य असा काल आणि अनुकूल अशी शारीरिक अवस्था निर्माण झालेली असते. या कालात गर्भाधानाला उपयुक्त अशी द्रव्ये गर्भाशयात जाणे आवश्यक असते. मैथुनाबरोबर जसा शुक्र शोणित संयोग होतो. तसाच त्याला पोषक अशा द्रव्यांचा आहारातून उपयोग करणेही श्रेयस्कर असते. त्यासाठी जी द्रव्ये प्रामुख्याने गर्भाधान संस्कारात सांगितली आहेत ती म्हणजे नारळ आणि तांदूळ ही होत.

शास्त्रात रुढीवलीयसी

शास्त्रापेक्षाही रुढीला महत्त्व अधिक आहे. कारण शास्त्र फक्त-शास्त्री पंडितांनाच कळते पण रुढी ही सामान्य माणसेही कटाक्षाने पाळतात व प्रत्यक्ष अमलात आणतात. ओटी भरायची म्हणजे तांदूळ नारळानेच भरायची. या रुढीला शास्त्राचा आधार आहे. खणा नारळाने ओटी भरणे हे सौभाग्यवतीला “अष्टपुत्रा सौभाग्यवती भव” हा आशिर्वाद सुफलित होण्यासाठी उपयुक्त अशी शास्त्रीय चिकित्सा आहे. या रुढीचा शास्त्रीय दृष्टीने विचार केल्यास खालील गोष्टी आपल्या ध्यानात येतील.

वृद्धिः समानैः सर्वेषाम्

शरीर शास्त्राचा एकमेव सिद्धांत असा आहे की, 'वृद्धिः समानैः सर्वेषाम्' समान गुण धर्मांनी समान गुणधर्मांची वृद्धी होते वाढ होते. जसे दोन टेबले अधिक

दोन खुर्या मिळून चार टेबले ही होऊ शकत नाहीत
चार टेबले करावयाची असल्यास दोन टेबलात दोन
टेबलेच अधिक मिळ- वावी लागतील. चिकित्सा
शास्त्राचा हा सिद्धांत गर्भाशय आणि नारळ यांच्याशी
आपण पडताळून पहात असतांना त्यात कशी समानता
दिसून येते ते पहा.

आकारातील समानता

नारळाचा आकार आणि गर्भाशयाचा आकार जवळ
जवळ सारखाच दिसतो. म्हणजे आकाराच्या दृष्टीने
दोहोत साम्य आहे. या साधर्म्यामुळे यांच्यात परस्पर
पोषक असे कार्य होईल समान रचना-गर्भाशयाच्या
रचनेत जसे गर्भाशयाच्या आतील एंडो- मेट्रीयम
मुलायम अंतस्त्वचा असते त्याचप्रमाणे नारळाच्या
आतही मऊ अशा खोबऱ्याचे अंतःपटल असते.
गर्भाशयात जसे गर्भोदक असते तसेच टणक अशा
नारळाच्या कवटीतील खोबऱ्यात पाणी असते.

गर्भधारणा कशी होते ?

पुरुषाचे वीर्य आणि स्त्री गर्भाशयातील गर्भबीज
यांचा संयोग झाल्यावर ते शुक्रजंतूने सुफलित झालेले
गर्भबीज जसे गर्भाशयाच्या अंतर्त्वचेला चिकटते व तेथे
वाढत जाऊन तो गर्भ पूर्ण आकार धारण करतो तद्वतच
नारळाच्या आतील बाजूला नारळाचा कोंब निर्माण
होतो. व त्याच कोंबातून पुढे नारळाच्या झाडाची

निर्मिती होते. अशा तऱ्हेने नारळाची आणि गर्भाशयाची गर्भ निर्मितीची प्रक्रिया समान स्वरूपाची आहे. त्यामुळे 'वृद्धिः समानैः सर्वेषाम् ' या आयुर्वेदीय चिकित्सा सूत्रानुसार नारळाचे कार्य तो पोटात गेल्यावर ओटीपोटात गर्भधारणेला मदत करण्याच्या दृष्टीने निश्चितपणे करू शकेल ही गोष्ट तर्कशास्त्रानेही सामान्य माणसाला समजण्यास अडचण पडणार नाही.

कोकणस्थांना अधिक संतति का ?

अनुभवाच्या दृष्टीने पाहू गेले असता असे दिसून येते की, फोकणातल्या आणि कारवारी लोकात इतरांच्या मानाने संततीचे प्रमाण अधिक दिसून येते. कारण त्यांच्या आहारात तांदळाचे आणि नारळाचे प्रमाणच अधिक असते हे होय.

पळसाचा गोंद म्हणजे वीर्य

नारळ हा जसा गर्भाशय सदृश आहे तसाच पळसाचा गोंद हे या योगातील दुसरे द्रव्य हे वीर्य सदृश आहे. पळसाच्या झाडाला खाचा मारून त्यातून बाहेर येणारा चिकट घट्ट असा जो द्रव पदार्थ बाहेर निघतो तो म्हणजे पळसाचे वीर्यच होय. पळसाच्या गोंदाला व्यवहारात कमरकस म्हणतात. कारण तो कंबरेला शक्ति देणारा आहे. कंबर म्हणजेच पेल्व्हिक रीजन शरीरातील भागातच गर्भाशय आणि मूत्राशय हे अवयव असतात. त्यामुळे हे द्रव्य यां अवयवांना शक्ति देण्याचे

कार्य करील ही गोष्टही सर्वाना सहज पटू शकेल.

मथुनै सदृश औषधीकरण

नारळात पळसाचा गोंद 'वीर्य' टाकण्याची क्रिया ही मैथुन सदृशच आहे. नारळाच्या शेंडीखाली असलेल्या छिद्रातून तो टाकावयाचा असतो. नारळाचे हे छिद्र गर्भाशयाच्या योनिमुखाप्रमाणे नारळाच्या योनि मुखाचे ठिकाणी असते. त्याही दृष्टीने विचार केल्यास जसे स्त्री शरीरातील योनिमुखात पुरुष वीर्य पडल्या नंतर गर्भ धारणा होते. त्याच प्रमाणे योनिमुख सदृश असलेल्या नारळात पळसाचा गोंद टाकून त्याचे पुटपाक पद्धतीने पचन करून तयार केलेले हे औषध हे गर्भ धारणेला निश्चित उपयुक्त होईल ही गोष्ट शरीर शास्त्रतर्कशास्त्र आणि द्रव्य गुण शास्त्र या तिन्ही शास्त्रांना सुसंगत अशीच दिसून येते.

नारळाचे औषधी गुणधर्म

नारिकेलं फलं शीतं । दुर्जरं बस्ति शोधनम् ॥ १ ॥

नारळ हे शीत गुणधर्माचे आहे. तसेच मूत्र मार्ग गर्भाशय इत्यादि अवयवातील दोष नाहीसे करून गर्भाशय शुद्ध करील आणि गर्भधारणेला उपयुक्त होईल ही गोष्ट सुस्पष्ट होते. गर्भादान हा जसा धार्मिक संस्कार आहे तसाच तो एक शारीरिक चिकित्सेचाही विषय आहे. त्याचे मंत्र तंत्र आणि विधिविधान शास्त्रोक्त

पद्धतीनेच करायला हव. त्या शिवाय त्यात सफलता प्राप्त होत नसते."गर्भाधान विधीत नारळाचे स्थान फार महत्वाचे आहे. नारळ ही. विश्वामित्राच्या प्रति सृष्टीतून निर्माण झालेली वस्तू आहे. त्याने सृष्टी उत्पन्न • करतांना ब्रह्मदेवावर ताण करायचा विडाच उचलला होता. ब्रह्मदेवाने दोन डोळ्यांचे प्राणी उत्पन्न केले तर विश्वामित्राने नारळाला तीन डोळे ठेवले. ब्रह्मदेवाने फळावर रस आणि आत कठीण अशी फोय ठेवली तर विश्वामित्राने नारळाला वरून टणक कवच ठेवले व आत पाणी ठेवले. इतर बीजाला बाहेरून कोंब फुटतो व त्याचे पुढे वृक्षात रुपांतर होते. याच्या उलट नारळाला आतून कोंब फुटतो व त्यातून वृक्ष निर्माण होतो.

ब्रह्मदेवाने जी स्त्री वंध्या ठरविली असेल त्या स्त्रीला नारळाच्या सेवनाने संतती होईल असे सामर्थ्य विश्वामित्राने नारळाला देऊन ठेविले आहे. म्हणून ज्यांना संतती होत नसेल त्यांनी गर्भधारणा होण्यासाठी विश्वामित्राच्या या गर्भदायक वस्तूचे शास्त्र शुद्ध पद्धतीने सेवन करावे याबाबत योग्य ते मार्गदर्शन आम्ही अवश्य देऊ.

गर्भधारणेसाठी नारळाच्या औषधी प्रयोगाचे सेवन पाळीच्या चौथ्या दिवशी करावे. कारण पाळीचे तीन दिवस मैथुनाला वर्ज्य असतात. म्हणून तीन दिवसानंतर गर्भधारणेचे औषध देणेच श्रेयस्कर असते. गाय माजाला आली म्हणजे ती ओरडते. बैलाची मागणी करते.

वेळी तिचे तोंड दाबून ठेवतात. तिला उपाशी ठेवतात. आणि नंतर मग तिला वळू देतात. बैलाबरोबर समागम करू देतात.

बैलाने समागम केल्यानंतर पुन्हा एक दिवस तिचे तोंड बांधून ठेवतात. चारा खाऊ देत नाहीत. याचे कारण जर तिला उपाशी ठेवले नाही तर गर्भ- धारणा होण्याऐवजी वीर्य उलटून पडते. हाच न्याय मानव सृष्टीत स्त्रियांचे बाबतीत ही लागू आहे.

त्यांना नारळ आणि पळसाचा गोंद यांचे पुटपाक पद्धतीने केलेले औषध देतांना पाळीच्या तिसऱ्या दिवशी उपवास करायला सांगावा. नंतर चौथ्या दिवशी अंधोळ त्यानंतर शुचिर्भूत होऊन आणि स्वस्तिपुण्याह वाचन करून शास्त्रोक्त पद्धतीने नारळाचे औषध तयार करून पचेल इतके खायला द्यावे. व त्या दिवशी निराहार राहून उपवास करून रात्री यथा विधी प्रसन्न चित्ताने आणि शास्त्रोक्त पद्धतीने पतीबरोबर रममाण व्हावे. उपवास करणे शक्य नसेल त्यांनी हलका असा अल्पोपहार करावा अगर दूध, फळे खावी

[स्त्री आणि पुरुष यांची वैद्यकीयदृष्ट्या तपासणी करून इतर काहीदोत्र असल्यास त्यावरही चिकित्सकाच्या सहाय्याने इतर आवश्यक ते औषधोपचार घेणे हितावह असते.]

धन्वन्तरिवन्दना

विशिष्टरोगौषध-बोधभावात्
रोग ब्रजाभाव विधान वीरम् ।
न तत्र यान्तश्च कदापि मोहं

धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ १ ॥

पीयूषपाणिं कुशलं क्रियासु
धीरं निरीहं शुभदं दयालुम् ।
प्रबुद्धसाङ्गागद-वेद-विद्यं
धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ २ ॥

स्वस्थेषु मैत्री करुणां रुजार्ते
प्रीति सुसाध्ये विधानमेव ।
उपेक्षणञ्चासु-मुमुक्षुमर्त्ये
धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ ३ ॥

इच्छन्तमग्र्यं परमं स्व-धर्मं
दुःखात्प्रयत्नेन सदातुराणाम् ।
निजात्म- जानामिव रक्षितारं
धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ ४ ॥

भूतानुकम्पेति परो हि धर्मः

निश्चित्य पथ्येन गदघ्नमस्मात् ।

सुसिद्धिमन्तं सुखिनम्प्रशान्तं

धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ ५ ॥

पुंसां गदानां विविधे निदाने

लिङ्गे सुशान्तौ च भवाप्रवृत्तौ ।

चतुर्विधज्ञान विशेषभाजं

धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ ६ ॥

देशस्य कालस्य तनोर्गदानां

द्रव्यस्य दोषस्य रसस्य चापि ।

अशेष-तत्त्वज्ञवरं प्रभावात्

धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ ७ ॥

स्पर्शावगम्यैर्बहुभिस्तु भावैः

शरीर जातैर्गदपीडितानाम् ।

आयुः प्रमाणान्यवबुध्यमानं

धन्वन्तरिवैद्यवरंनमामि ॥८ ॥

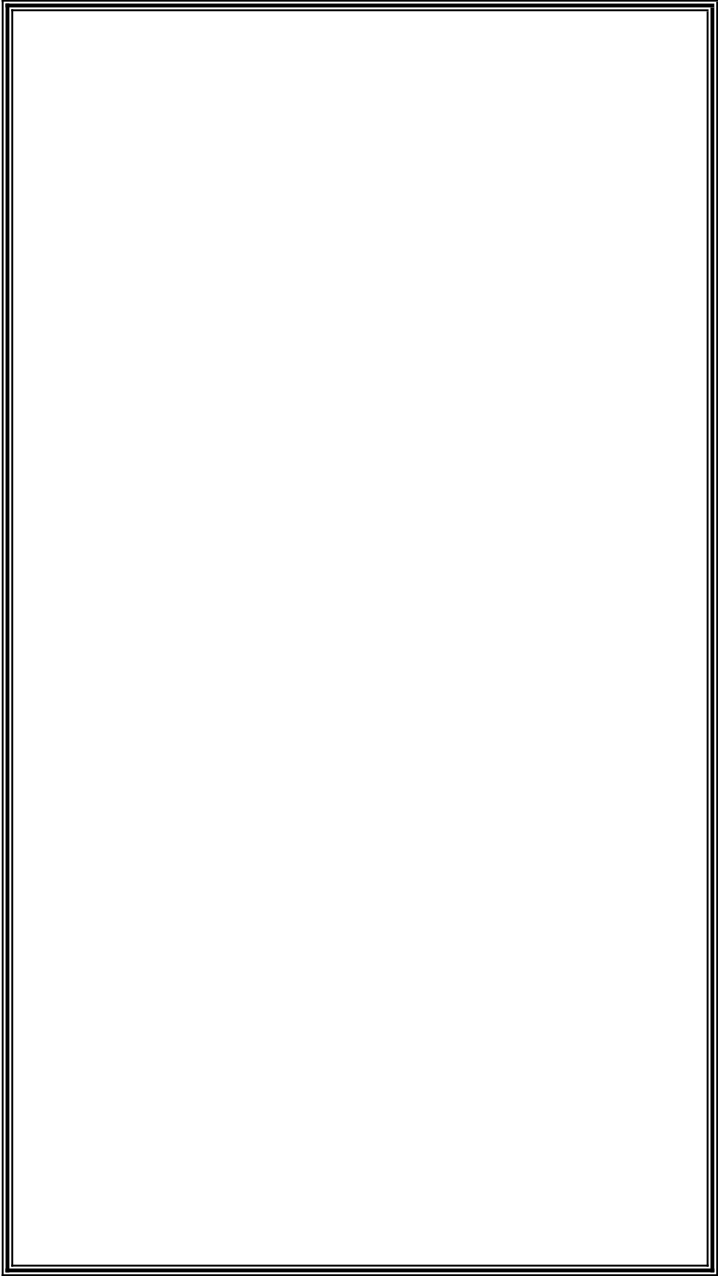
असाध्यवर्जं परियाप्य याप्यान्

साध्यामयान् सिद्धसुयोगसङ्घैः ।

निघ्नन्तमव्याहतबुद्धिवेगं

धन्वन्तरि वैद्यवरं नमामि ॥ ९ ॥

इति हरिनारायणशर्मावैद्यविरचिताधन्वन्तरिवन्दनासमाप्ता ।

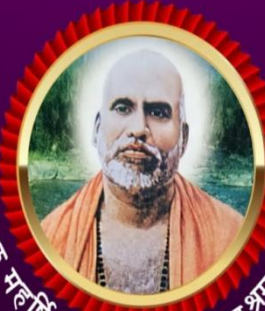




श्री स्वामी ब्रह्मविद्यानन्द



श्री वैद्य प्रभुचित्त (शंकर)



श्री महुर महर्षि मलयाळ स्वामी आश्रम सोलापुर



वैद्य सायण्णा देवर्कोंडा



ब्रह्मचारी अजय चैतन्य